तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 12, अंक - 11, अक्टूबर 2024 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

जीवन जब अर्पित किया, सरस्वती के नाम
उस साधक का जगत यह, खूब करे सम्मान

खूब परिश्रम कर लो बच्चो

खूब परिश्रम कर लो बच्चो,
भाग्य अपने हाथ है।

जैसा कर्म करेंगे हम,
वैसा ही फल पाएँ हम।
देख मुसीबत अपने सामने,
कभी नहीं घबराएँ हम।
पग-पग पर प्यारे बच्चो,
ईश्वरीय शक्ति साथ है।
खूब परिश्रम.....

मकड़ी की भाँति जीवन में,
जंजाल स्वयं बनाते हैं।
उसी जाल में बँधकर हम,
उलझन ही पैदा करते हैं।
मुक्त होने की उमंग जगा लो,
फिर जंजाल पूरा साफ है।
खूब परिश्रम.....

आलस्य को छोड़ सदा,
तुम मेहनत करते रहना।
हिम्मत रख तुम आगे बढ़कर,
स्वयं को ऊँचा उठाना।
दृढ़ इच्छाशक्ति से ही,
होती नैया पार है।
खूब परिश्रम.....

तृष्णा और इच्छाओं का तुम,
मत बुनना ताना-बाना।
परोपकार तुम करते रहना,
जग में पहचान बनाना।
कर्म हमारे साथ चलेंगे,
और नहीं कुछ साथ है।
खूब परिश्रम.....

सुविचार सदा मन में रखकर,
सत्कर्म ही करते रहना।
पहचान शक्ति अंतर्मन की,
तुम आसमान को छूना।
दृढ़संकल्प ले कर्म करें हम,
तो सदा सफलता हाथ है।
खूब परिश्रम.....

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी, गुरुग्राम, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अक्टूबर-2024

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महिपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. आर.एस. ढिल्लों
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. ऋचा राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Mini Ahuja on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"कभी किसी को उसके बीते हुए समय से मत परखिए... लोग गिरते हैं, सँभलते हैं, फिर सीखते हैं और आगे बढ़ते हैं।"

- शिक्षण-कार्य है मानव-निर्माण का सबसे पवित्र अभियानः राष्ट्रपति मुर्मू 5
- छात्रों के जीवन को गढ़ने में शिक्षकों की अहम् भूमिका : प्रधानमंत्री 7
- डॉ. अविनाशा : छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित शिक्षिका 8
- चारु मैनी : शिक्षा में उत्कृष्टता व नवाचार की मिसाल 9
- आसौधा क्लस्टर में आयोजित हुई अनूठी पीटीएम 10
- शिक्षा प्रणाली में बढ़ता आईसीटी का महत्त्व 12
- सुखद स्मृतियों का हिस्सा बन गया मनाली कैंप 14
- छात्राओं ने लगाई पेंटिंग प्रदर्शनी, दिये गंभीर संदेश 18
- आनन्ददायी शिक्षा का केंद्र बना प्रेमनगर विद्यालय 20
- बेहद प्रतिभाशाली चित्रकार हैं सुरेंद्र मोरवाल 24
- मेधाविनी छात्रा पल्लवी 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
- समाज की ताकत 31
- The 9 days of Navratri and their Significance 32
- A Delightful Journey of 16 Years 35
- International day of the Girl Child 36
- October in India 39
- Trekking in Morni Hills 42
- The Blue Sky Beckons 46
- The Canvas of Emotions 47
- Amazing Facts 48
- General Knowledge 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

रचनाशीलता को उर्वर बनाता है मौलिक लेखन

लेखन एक कला है। यह अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को सहेजते हैं। कई बार लेखन दूर-दराज के लोगों को अपने विचार भेजने के लिए होता है,तो कई बार हमारे अपने ही विचारों या अनुभव को अपने ही लिए सहेजने के लिए। सच तो यह है कि लेखन अभिव्यक्ति, मौखिक अभिव्यक्ति से ज्यादा कठिन होती है। बोलते समय हम वाक्य विन्यास, शब्दों के चयन या व्याकरण की शुद्धता के प्रति बहुत अधिक सचेत हों या न हों, लेकिन लेखन के समय हमारी लेखनी ज्यादा अनुशासित होती है। हमारे बहुत से अध्यापकगण 'शिक्षा सारथी' के लिए नियमित रूप से लिखते रहते हैं। कुछ अध्यापक जब भी किसी शिविर या यात्रा पर बच्चों के साथ जाते हैं तो उसके अनुभव 'शिक्षा सारथी' के साथ साझा करते हैं। हमारी कोशिश रहती है कि ऐसी रचनाओं को पत्रिका में अधिक से अधिक स्थान दिया जाए। पत्रिका का हर अंक स्थायी स्तंभ 'बालसारथी' भी लाता है, जिसमें बालकों को मौलिक लेखन के लिए प्रेरित किया जाता है, लेकिन इस बार विभाग द्वारा एक अनूठी शुरुआत की जा रही है। बालदिवस के उपलक्ष्य में 'शिक्षा सारथी' का आगामी अंक बालविशेषांक के रूप में निकाला जा रहा है जिसमें अधिकतर रचनाएँ हमारे नन्हे लेखकों द्वारा रचित होंगी। इसके लिए सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को सूचित किया गया है।

शिक्षकगण से निवेदन है कि आप अपने-अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करते रहिये। स्वयं भी लिखिए और विद्यार्थियों को भी रचनात्मक लेखन के लिए प्रेरित कीजिए। आपकी रचनात्मक यात्रा में 'शिक्षा सारथी' सदैव आपके साथ है।

-संपादक

शिक्षण-कार्य है मानव-निर्माण का सबसे पवित्र अभियानः राष्ट्रपति मुर्मू

डॉ. प्रदीप राठौर

भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देश भर के शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए। हरियाणा की जीएमएसएसएस एनआईटी-3 फरीदाबाद की अंग्रेज़ी शिक्षिका डॉ. अविनाशा शर्मा व डीएवी पब्लिक स्कूल सैक्टर- 48-49 गुरुग्राम की प्रधानाचार्या चारु मैनी भी पुरस्कार विजेताओं में शामिल थीं।

राष्ट्रपति ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षकों को ऐसे नागरिक तैयार करने होंगे जो न केवल शिक्षित हों, बल्कि संवेदनशील, ईमानदार और उद्यमी भी हों। उन्होंने कहा कि जीवन में आगे बढ़ना ही सफलता है, लेकिन जीवन की सार्थकता दूसरों के कल्याण के लिए काम करने में है। हमारे अंदर करुणा होनी चाहिए। हमारा आचरण नैतिक होना चाहिए। सार्थक जीवन में ही सफल जीवन निहित है। छात्रों को ये मूल्य सिखाना शिक्षकों का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि गुरु, आचार्य और शिक्षक को हमारी परंपरा में बहुत आदर दिया जाता है। 'गुरु' शब्द, आध्यात्मिक ज्ञान देने वाले के लिए प्रयुक्त होता है। 'आचार्य' एवं 'शिक्षक' शब्दों का प्रयोग बौद्धिक और व्यावहारिक विद्या प्रदान करने वाले टीचर्स के लिए होता है। आम बोलचाल में विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों को गुरुजी कहने की परंपरा रही है। खगोल शास्त्र के प्राचीन विद्वानों ने हमारे सौर-मंडल के सबसे बड़े ग्रह को देवगुरु बृहस्पति का नाम दिया। सप्ताह के एक दिन को बृहस्पतिवार या गुरुवार कहा जाता है। यह भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान पर सामाजिक मूल्यों के प्रभाव का उदाहरण है।

राष्ट्रपति ने पुरस्कार विजेता शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ाने के अद्भुत प्रयास किए हैं। उन्होंने पढ़ाने के नए-नए और रोचक तरीके निकाले हैं, नई तकनीक का प्रयोग किया है, शिक्षा को समावेशी बनाने में योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि पूरे देश में, अनगिनत शिक्षक-गण निष्ठा के साथ कार्यरत हैं। सबको पुरस्कार देना संभव नहीं हो पाता है। उन्होंने उन सभी शिक्षकों का भी धन्यवाद किया जो अपने असाधारण प्रयासों और प्रतिबद्धता के बल पर विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में सराहनीय भूमिका निभा रहे हैं।

उन्होंने बीते दिनों को याद करते हुए कहा कि अध्यापक दिवस के अवसर पर उन्हें वह समय याद आता है जब वे ओडिशा के रायरंगपुर में श्री ऑरोबिंदो इंटीग्रल स्कूल में पढ़ाती थीं। उन्हें वहाँ बच्चों से न केवल अपार स्नेह मिला, बल्कि उनसे बहुत कुछ सीखने को भी मिला। आज भी जब वे बच्चों या शिक्षकों के बीच होती हैं, उस समय उनके अंदर का शिक्षक फिर से जीवंत हो जाता है। शिक्षा ही जीवन-निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्हें जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों में सहज ही स्कूल और शिक्षक याद आते हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष 25 जुलाई

को राष्ट्रपति के उनके कार्यकाल का दूसरा वर्ष सम्पन्न हुआ। उन्होंने निर्णय लिया कि उस दिन वे राष्ट्रपति-भवन परिसर में स्थित विद्यालय में बच्चों के साथ क्लास रूम में समय बिताएँगी। बच्चों के साथ प्रकृति और पर्यावरण के विषय में बातचीत करके उन्हें बहुत संतोष का अनुभव हुआ।

उन्होंने कहा कि एक शिक्षक अपने आचरण एवं विचारों से विद्यार्थियों के जीवन में अमिट छाप छोड़ सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक कथन इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उनके शिक्षकों ने पुस्तकों की मदद से उन्हें जो सिखाया था, वह उन्हें बहुत ही कम याद रहा है। पर पुस्तकों से अलग हट कर शिक्षकों ने स्वयं जो कुछ सिखाया था, उसका स्मरण बाद तक भी बना रहा। गांधीजी के कथन का भाव यह है कि बच्चे देखकर-सुनकर बहुत सारे मूल्य सीखते हैं और अपनाते हैं। इसलिए कक्षा के अंदर और बाहर शिक्षकों का आचरण उत्कृष्ट होना चाहिए।

शिक्षकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि एक मूर्तिकार, मिट्टी से मूर्ति बनाता है। एक ही तरह की मिट्टी से कोई मूर्तिकार बहुत कलापूर्ण प्रतिमा बनाता है तो कोई दूसरा मूर्तिकार सामान्य प्रतिमा बनाता है। मिट्टी वही है, प्रतिमाओं में अंतर है। यह अंतर मूर्तिकार की कला और निष्ठा के कारण होता है। कोई बच्चा यदि अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है तो इसमें शिक्षण व्यवस्था और शिक्षकों की ज्यादा बड़ी ज़िम्मेदारी बनती है। किसी भी शिक्षा-प्रणाली की सफलता में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका शिक्षकों की होती है। शिक्षण-कार्य केवल एक नौकरी नहीं है। यह मानव निर्माण का पवित्र अभियान है।

उन्होंने कहा कि अगर कोई बच्चा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है, तो शिक्षा व्यवस्था और शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बड़ी हो जाती है। उन्होंने कहा कि अक्सर शिक्षक-गण केवल परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देते हैं। लेकिन श्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन, उत्कृष्टता का मात्र एक आयाम है। कोई बच्चा बहुत अच्छा खिलाड़ी हो सकता है। किसी बच्चे में नेतृत्व क्षमता होती है। कोई बच्चा सामाजिक कल्याण के कार्यों में उत्साहित होकर भाग लेता है। ऐसे आयामों की भी प्रशंसा होनी चाहिए। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की स्वाभाविक प्रतिभा को पहचानना होता है और उसे बाहर निकालना होता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति उसके विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण मानदंड है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों और अभिभावकों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे बच्चों को इस तरह शिक्षित करें कि वे हमेशा महिलाओं की गरिमा के अनुरूप आचरण करें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं का सम्मान केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी होना चाहिए।

राष्ट्रपति ने कहा कि गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अनेक क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा के विकास में भी अभिनव योगदान दिया है। गुरुदेव का स्पष्ट विचार था कि एक अध्यापक यदि स्वयं विद्या का निरंतर अर्जन नहीं करता रहता है तो वह सही अर्थों में शिक्षण का कार्य कर ही नहीं सकता है। जिस दीपक की शिखा प्रज्वलित नहीं रहती है उससे दूसरे दीपकों को प्रज्वलित करना असंभव है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि गुरुदेव के विचारों के अनुसार, शिक्षक के तौर पर शिक्षक अपने ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखेंगे। ऐसा करने से उनका अध्यापन और अधिक प्रासंगिक एवं रुचिकर बना रहेगा।

उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बात करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल-विकास पर विशेष जोर दिया गया है। इस नीति में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए व्यावसायिक अनुभव प्राप्त करने पर बल दिया गया है। इस अनुभव से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। समग्र विकास में कौशल विकास और उद्यमिता का भी उतना ही महत्त्व है जितना एकेडमिक लर्निंग का है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में विश्वकर्मा को देवता का दर्जा दिया जाता है।

राष्ट्रपति ने शिक्षकों से कहा कि उनके छात्रों की पीढ़ी एक विकसित भारत का निर्माण करेगी। उन्होंने शिक्षकों और छात्रों को वैश्विक मानसिकता और विश्व स्तरीय कौशल रखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि महान शिक्षक एक महान राष्ट्र का निर्माण करते हैं। केवल विकसित मानसिकता वाले शिक्षक ही ऐसे नागरिक तैयार कर सकते हैं जो एक विकसित राष्ट्र का निर्माण करेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि छात्रों को प्रेरित करके हमारे शिक्षक भारत को दुनिया का ज्ञान केंद्र बनाएँगे।

drpradeeprathore@gmail.com

छात्रों के जीवन को गढ़ने में शिक्षकों की अहम् भूमिका : प्रधानमंत्री

प्रत्येक वर्ष शिक्षक दिवस के अवसर पर देश के कुछ बेहतरीन शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने अपनी प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत से न केवल शिक्षा क्षेत्र की गुणवत्ता में सुधार किया है, बल्कि अपने छात्रों के जीवन को भी समृद्ध बनाया है। इस वर्ष पुरस्कारों के लिए देश भर से 82 शिक्षकों का चयन किया गया था, जिनमें स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा चुने गए 50 शिक्षक, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा चुने गए 16 शिक्षक और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा चुने गए 16 शिक्षक शामिल थे। गर्व का विषय है कि इन में हरियाणा की डीएवी पब्लिक स्कूल सैक्टर-48-49 गुरुग्राम की प्रधानाचार्या चारु मैनी व जीएमएसएसएस एनआईटी-3 फरीदाबाद की अंग्रेज़ी शिक्षिका डॉ. अविनाशा शर्मा भी शामिल थीं। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देश भर के शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित इन शिक्षकों से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7, लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर बातचीत की। पुरस्कार विजेताओं ने भी प्रधानमंत्री के साथ अपने शिक्षण अनुभव साझा किए। उन्होंने सीखने को और अधिक रोचक बनाने के लिए उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली दिलचस्प तकनीकों के बारे में भी बात की। उन्होंने अपने नियमित शिक्षण कार्य के साथ-साथ उनके द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों के उदाहरण भी साझा किए। उनके साथ बातचीत करते हुए, प्रधानमंत्री ने शिक्षण के प्रति उनके समर्पण और पिछले कुछ वर्षों में उनके द्वारा दिखाए गए उल्लेखनीय उत्साह की सराहना की, जिसे पुरस्कारों के माध्यम से मान्यता मिली है।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभाव पर चर्चा की और अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने के महत्त्व के बारे में बताया। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षक छात्रों

को विभिन्न भाषाओं में स्थानीय लोककथाएँ सिखा सकते हैं, ताकि छात्र कई भाषाएँ सीख सकें और भारत की जीवंत संस्कृति से भी परिचित हो सकें।

प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को भारत की विविधता को जानने के लिए शैक्षणिक भ्रमण पर ले जा सकते हैं, जिससे उन्हें सीखने में मदद मिलेगी और उन्हें अपने देश के बारे में समग्र रूप से जानने में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

प्रधानमंत्री ने सुझाव दिया कि पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों को सोशल मीडिया के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ना चाहिए और अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना चाहिए ताकि हर कोई ऐसी प्रथाओं से सीख सके, उन्हें अपना सके और उनसे लाभ उठा सके। प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सेवा प्रदान कर रहे हैं और आज के युवाओं को विकसित भारत के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी उनके हाथों में है।

इससे पूर्व शिक्षकों के लिए दिये संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि छात्र-छात्राओं को मार्गदर्शन देकर उनके जीवन को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यार्थियों को सपने देखने के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें उन सपनों को पूरा करने का हौसला भी प्रदान करते हैं। छात्र-छात्राओं के व्यक्तिगत विकास के साथ उन्हें देश के एक जिम्मेदार और समर्थ नागरिक के रूप में तैयार करने में भी शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश विद्यार्थियों व शिक्षकों को साथ लेकर शिक्षा सुधारों की ओर तेज़ी से अग्रसर है। विकास की इस राह में सभी संसाधनों के जरिये शिक्षकों के हाथों को और मज़बूत किया जा रहा है। उन्हें खुशी है कि परंपरागत ज्ञान और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मेल से आज भारत विश्वभर में ज्ञान के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में उभर रहा है। उन्होंने कहा कि आज़ादी के शताब्दी वर्ष 2047 तक हमने एक आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण का संकल्प लिया है। आज जो छात्र-छात्राएँ स्कूल-कॉलेजों में पढ़ रहे हैं, आने वाले वर्षों में उनके प्रयासों से ही देश को एक नई दिशा मिलेगी। इस भावी पीढ़ी के जीवन को अपने ज्ञान से सींचकर हमारे शिक्षक साथी राष्ट्रनिर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

-डॉ. प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

डॉ. अविनाशा : छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित शिक्षिका

सुदेश रानी

डॉ. अविनाशा शर्मा ने 2014 में हरियाणा के एक सरकारी स्कूल में अंग्रेज़ी प्रवक्ता के पद से अपने शैक्षिक सफर की शुरुआत की। उनके मन में उन विद्यार्थियों के जीवन में बदलाव लाने की चाह थी जो समाज के वंचित वर्ग से आते हैं। उनके आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) में नवाचारों के अनुभव ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उनकी मेहनत उनके विद्यार्थियों और हरियाणा के स्कूल शिक्षा विभाग के लिए सहायक साबित हो सकती है। उन्होंने सरकारी स्कूल के बच्चों को भाषा-कौशल सिखाने के लिए एक भाषा प्रयोगशाला की परिकल्पना की, जहाँ वे एक बेहतरीन वातावरण में भाषा सीखने का आनंद ले सकें। आखिर एक दिन उनके विचारों को मूर्त रूप मिला। उनका स्कूल हरियाणा का पहला स्कूल बन गया, जिसमें एक सुसज्जित अंग्रेज़ी भाषा प्रयोगशाला थी। भाषा शिक्षक के लिए यह एक सपने के सच होने जैसा था, क्योंकि अब उसके पास अपने विद्यार्थियों को ऊँचाइयों तक ले जाने का साधन था। प्रयोगशाला आईसीटी उपकरणों जैसे प्रोजेक्टर, हेडफोन, और शिक्षक व विद्यार्थियों दोनों के लिए कंसोल, साथ ही सभी रिकॉर्डिंग उपकरणों से सुसज्जित थी।

संप्रति राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एनआईटी-तीन फरीदाबाद में कार्यरत डॉ. अविनाशा शर्मा ने कुछ मॉड्यूल बनाए, जिन्हें भाषा प्रयोगशाला में एक क्रम में उपयोग किया जा सकता है ताकि संचार कौशल में सुधार हो सके और भविष्य में नौकरी के साक्षात्कारों के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके। उन्होंने अपने विद्यार्थियों के कुछ अभिव्यक्तियों को रिकॉर्ड किया और उन्हें अपने अंतरराष्ट्रीय पेशेवर सहयोगियों के साथ साझा किया। यह समय था जब उन्होंने अपने विद्यार्थियों को वैश्विक मंच पर लाने का निर्णय लिया। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय के साथ एक अंतरराष्ट्रीय स्काइपाथन का आयोजन किया, जहाँ उनके विद्यार्थियों के प्रदर्शन ने उन्हें गर्व महसूस कराया। 2019 में, कई वैश्विक शिक्षा प्रणालियाँ पहले से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग की ओर बढ़ रही थीं।

उन्होंने शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर यूनेस्को के लिए कुछ शोधपत्र लिखे और अंततः मार्च 2019 में उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में बोलने का अवसर मिला, जहाँ उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा प्रयोगशाला में एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) को शामिल करने पर अपने विचार साझा किए। इसका उद्देश्य वंचित छात्रों को समकालीन शिक्षा सुधारों से परिचित कराना था। उनके विचारों को वैश्विक शिक्षाविदों ने सराहा।

हालांकि 2020 में कोरोना वायरस के कारण पूरी दुनिया पर संकट आ गया था, लेकिन डॉ. शर्मा जैसे शिक्षकों ने अपने नवाचारों के लिए जगह बनाई। उन्होंने स्पोकन इंग्लिश प्रोग्राम 'आई एम नॉट अफ्रेड ऑफ इंग्लिश' को एजुसैट हरियाणा प्रसारण चैनल पर शुरू किया और महामारी के दौरान हज़ारों विद्यार्थियों की सही अंग्रेज़ी भाषा का उच्चारण सीखने में मदद की। उनके अकादमिक पाठों ने दीक्षा पोर्टल पर स्थान पाया, जो लॉकडाउन के अंधकारमय दिनों में छात्रों के लिए आशा की किरण बने।

उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में कई शोधपत्र लिखे हैं। किरगिज़स्तान के ओश राज्य विश्वविद्यालय की साइंटिफिक जर्नल बुलेटिन, तुर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव इन्क्वायरी, शोध संचार बुलेटिन, कला सरोवर, एमआरआईआईआरएस, और केप कोमोरिन ट्रस्ट ने उनके शोधपरक लेखों को प्रकाशित किया है।

डॉ. अविनाशा शर्मा की किताब 'लर्न हाउ टू राइट इन 90 डेज- मास्टरिंग क्रिएटिव राइटिंग' ने हरियाणा के सरकारी स्कूलों के कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए काफी लाभकारी साबित हुई है। हरियाणा स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा सुझाए गए पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी गई यह यह पुस्तक छात्रों को अपने लेखन कौशल में सुधार लाने के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। निश्चित तौर पर इस पुस्तक ने विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक विकास में योगदान दिया है।सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सहज व मनोरंजक बनाने की उनकी यात्रा सतत जारी है।

हिंदी अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-25 पंचकूला

चारु मैनी : शिक्षा में उत्कृष्टता व नवाचार की मिसाल

परंपरागत कक्षा शिक्षण से परे एक नवाचारी सोच से शिक्षण ने प्रधानाचार्या चारू मैनी को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार दिलाया है। चारु मैनी गुरुग्राम सैक्टर 49 स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल हैं। चारु मैनी ने कहा कि हमारा लक्ष्य शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और नवाचार करना रहा है और इस कारण जब कोई सम्मान या पुरस्कार मिलता है तो हार्दिक प्रसन्नता होती है। उनका मानना है कि स्कूलों को छात्रों के समग्र विकास के लिए अभिनव परियोजनाओं को अपनाना चाहिए। नियमित कक्षाओं और नियमित परीक्षाओं के अलावा, विद्यालय का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि यहाँ से निकलने वाला विद्यार्थी वास्तविक जगत में एक अच्छा संचारक और आलोचनात्मक विचारक हो। मैनी के नेतृत्व में, डीएवी सैक्टर 49 स्कूल में कई अभिनव परियोजनाओं की शुरुआत की गई। ऐसी ही एक योजना है- 'बी फिनस्मार्ट'। इस परियोजना के तहत छात्रों को बुनियादी स्तर पर अपने वित्त का प्रबंधन करना सिखाया जाता है, ताकि जब वे अपने कॉलेज जीवन में कदम रखें, तो उन्हें अपने मौद्रिक खर्चों का प्रबंधन करने में कुछ आसानी हो, जो आज की प्रमुख चुनौतियों में से एक है।

मूल रूप से राजस्थान के छोटे से शहर खेतड़ी नगर से ताल्लुक रखने वाली मैनी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित मिरांडा हाउस से अपनी शैक्षणिक यात्रा शुरू की, जहाँ उन्होंने रसायन विज्ञान में स्नातक की पढ़ाई की और बाद में उसी विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने बताया कि मिरांडा हाउस के एक छात्रावास में रहने से वे एक व्यक्ति के रूप में बदल गईं। इसने इन्हें एक अधिक स्वतंत्र और उद्देश्यपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में आकार दिया। 80 के दशक में दिल्ली में इन्हें जिस तरह का अनुभव मिला, उससे इन्हें खुद को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। इन्हें एहसास हुआ कि इन्हें समाज के लिए कुछ करना चाहिए और शिक्षण ने इन्हें वह संतुष्टि दी। 32 वर्षों के शिक्षण अनुभव के साथ, जिसमें प्रिंसिपल के रूप में सात वर्ष शामिल हैं, मैनी ने दिल्ली, मुंबई और गुरुग्राम के निजी स्कूलों में रसायन-शास्त्र पढ़ाया है। वे गर्व से कहती हैं कि वे केवल पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को ही नहीं पढ़ातीं, बल्कि वैज्ञानिक अवधारणाओं के प्रति विद्यार्थियों की रुचि भी जागृत करती हैं। निश्चित तौर पर इससे शिक्षण सरस बनता है। 2006 से, ये केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ मास्टर ट्रेनर के रूप में मिलकर काम कर रही हैं और एनसीईआरटी, सीबीएसई और एससीईआरटी के लिए लगभग 24 रसायन शास्त्र की किताबें लिखने में योगदान दे दिया। इन्होंने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, पीएम ई-विद्या चैनल, दीक्षा पोर्टल, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स और स्वयं पोर्टल जैसी पहलों में भी सक्रिय रूप से योगदान दिया है।

उन्होंने बताया कि उनके विद्यालय में सालाना प्रदर्शन के आधार पर 'प्रदर्शन संवर्द्धन ट्रॉफी' दी जाती है, ताकि उनका हौसला बढ़ाया जा सके। अगर कोई बच्चा इस वर्ष 55% अंक प्राप्त करता है, जो उसके पिछले वर्ष के प्रदर्शन से अधिक है, तो ऐसे विद्यार्थी को भी 'प्रदर्शन संवर्द्धन ट्रॉफी' दी जाती है। इस तरह, 90% अंक प्राप्त करने वाला और 50% अंक प्राप्त करने वाला दोनों ही बेहतर करने और अपने प्रदर्शन में निरंतर सुधार हेतु प्रेरित रहते हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय की चारदीवारी से बाहर ले जाकर व उन्हें विभिन्न स्थानों की सैर करवा कर विभिन्न विषयों का शिक्षण रोचक ढंग से कराया जाता है। निश्चित तौर पर व्यावहारिक अनुभव से सीखी गई चीजें सहज की सीखी जाती हैं और लंबे समय तक याद रहती हैं। इनके विद्यालय में विद्यार्थियों को 'जीवन कौशल पुरस्कार' के लिए भी चुना जाता है। छात्रों को एक व्यावहारिक परीक्षा में उनके प्रदर्शन के आधार पर शॉर्टलिस्ट किया जाता है, जिसमें ज्यादातर स्थितिजन्य और नैतिकता से संबंधित प्रश्न शामिल होते हैं, इसके बाद छात्रों द्वारा स्वयं मतदान सत्र होता है। मैनी ने कहा कि वे चुनौतियों का डटकर सामना करती हैं। यह पुरस्कार इन्हें और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगा।

सुदेश रानी
हिंदी अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-25 पंचकूला

आसौधा क्लस्टर में आयोजित हुई अनूठी पीटीएम

झज्जर जिले के बहादुरगढ़ खंड के इस क्लस्टर में पीटीएम को गतिविधि आधारित बनाकर किया गया एक सफल प्रयोग

डॉ. सुदर्शन पुनिया

शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को केवल पाठ्यक्रम की जानकारी देना ही नहीं है, बल्कि यह भी है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जहाँ शिक्षक, अभिभावक, और समुदाय सभी मिलकर सहयोग कर सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022 के अध्याय दस में अभिभावकों तथा समुदाय की भूमिका बताते हुए कहा गया है, बच्चे के अधिगम तथा विकास में माता-पिता तथा परिवार, विद्यालय के साथ एक सहयोगी के रूप में काम करते हैं। बच्चे के प्रारंभिक वर्षों में अभिभावकों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे विद्यालय में चल रही गतिविधियों को समझें और सहयोग दें। साथ ही अध्यापकों के लिए भी ज़रूरी है कि वे बच्चे के घर की स्थिति की जानकारी रखते हों ताकि बच्चे से बातचीत करते हुए वे इस बात को ध्यान में रखें।

इसी सोच के तहत जिला झज्जर के ब्लॉक बहादुरगढ़ के अंतर्गत आने वाले आसौधा क्लस्टर में एक अभिनव कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका नाम था गतिविधि-आधारित निपुण अभिभावक-शिक्षक बैठक।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों को विद्यालय की गतिविधियों और बच्चों की पढ़ाई में शामिल करना और उनके साथ मिलकर बच्चों की प्रगति के बारे में चर्चा करना था। इसके लिए खंड बहादुरगढ़ के संकुल असौधा में एक नवाचारी पहल की गई। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये गए-

1. क्लस्टर स्तर पर बैठक का आयोजन- इस कार्यक्रम की शुरुआत क्लस्टर मुखिया श्री पवन गोयल और एबीआरसी (सहायक संकुल संसाधन समन्वयक) सरिता कुमारी के नेतृत्व में हुई, जहाँ क्लस्टर के सभी विद्यालयों के मुखियाओं की बैठक बुलाई गई। इस बैठक में कार्यक्रम की अवधारणा और इसके उद्देश्य समझाए गए। अभिभावक-शिक्षक बैठक को गतिविधि-आधारित बनाने का विचार प्रस्तुत किया गया ताकि अधिक से अधिक अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

2. अभिभावकों की भागीदारी के लिए विचार- विमर्श-बैठक में विद्यालय मुखियाओं से सुझाव लिए गए कि किस प्रकार अभिभावकों को इस बैठक में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बैठक में यह चर्चा हुई कि अधिक से अधिक अभिभावकों, विशेषकर महिलाओं की उपस्थिति को कैसे बढ़ाया जाए। इसके लिए विद्यालय मुखियाओं ने कई नवाचारी विचार साझा किए। अंत में यह निर्णय लिया गया कि पारंपरिक पीटीएम से हटकर इस बार कुछ मनोरंजक और खेलकूद आधारित गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी, जिससे अभिभावक केवल अपने बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर चर्चा करने तक सीमित न रहें, बल्कि एक सकारात्मक और आनंददायक वातावरण का हिस्सा भी बनें।

3. मनोरंजक गतिविधियों का चयन- अभिभावकों के लिए कई मनोरंजक खेल चुने गए जिनमें मटका रेस, नींबू-चम्मच रेस, तीन टांगों की दौड़, रस्साकस्सी, शतरंज, कैरम बोर्ड, म्यूजिकल चेयर और रुमाल झपट्टा आदि शामिल थे। इन गतिविधियों को इस प्रकार चुना गया ताकि सभी आयुवर्ग और शारीरिक क्षमता के अभिभावक उन में भाग ले सकें।

4. विद्यालय स्तर पर तैयारियाँ- क्लस्टर स्तर की बैठक के बाद सभी विद्यालय मुखियाओं ने अपने विद्यालयों

के स्टाफ के साथ बैठक की और अभिभावकों के लिए उपयुक्त खेलों का चयन किया। इसके बाद अभिभावकों को औपचारिक निमंत्रण-पत्र भेजे गए, व्हाट्सएप संदेश और फोन कॉल के माध्यम से भी सूचना दी गई। अभिभावकों से उनके बच्चों के माध्यम से सहमति-पत्र मंगवाया गया ताकि उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। अभिभावकों को प्रोत्साहित किया गया कि वे कम से कम एक गतिविधि में भाग अवश्य लें और उसके बाद अपने बच्चे के शैक्षणिक और व्यावहारिक प्रगति पर चर्चा करें।

5. अभिभावकों और विद्यार्थियों को प्रेरित करना- विद्यार्थियों को भी प्रेरित किया गया कि वे अपने माता-पिता से आग्रह करें कि वे इस गतिविधि-आधारित पीटीएम में अवश्य भाग लें। उन्हें यह जानकारी दी गई कि इस कार्यक्रम में विजेताओं के लिए पुरस्कार भी रखे गए हैं, जिससे अभिभावकों का उत्साह और भी बढ़ा।

6. पीटीएम के आयोजन का दिन- अभिभावक-शिक्षक बैठक के दिन अधिकतर अभिभावक विद्यालय में पहुँचे, खासकर महिला अभिभावकों की संख्या पुरुष अभिभावकों से अधिक रही। यह इस बात का प्रमाण था कि इस प्रकार की गतिविधियों से महिलाएँ अधिक प्रोत्साहित होती हैं और उनका विद्यालय में भाग लेना आसान होता है। अभिभावकों ने खेलों में भाग लेकर न केवल आनंद लिया बल्कि अपने बच्चों के साथ संबंधों को भी मज़बूत किया। इस अनोखी पीटीएम ने बच्चों के सामने एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया और उन्हें यह संदेश दिया कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं होती बल्कि इसके दायरे में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास भी शामिल है। अभिभावकों के बच्चों की शैक्षणिक प्रगति के बारें में चर्चा करते हुए अध्यापकों को आश्वस्त किया कि वे अपने बच्चों की पढाई में सहभागी बनकर अपना योगदान देंगे।

7. अधिकारियों की उपस्थिति और निरीक्षण- इस अभिनव कार्यक्रम का निरीक्षण करने के लिए ब्लॉक बहादुरगढ़ के मेंटर्स, खंड शिक्षा अधिकारी मुन्नी सहारण, खंड संसाधन समन्वयक शेर सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार, प्राचार्य डाइट बीपी राणा, जिला निपुण समन्वयक डॉ. सुदर्शन पुनिया भी कुछ विद्यालयों

में पहुँचे। उन्होंने इस अनूठे पीटीएम में आनंददायक गतिविधियों में भागीदारी करते हुए अभिभावकों और शिक्षकों के साथ बातचीत की और बच्चों की प्रगति पर चर्चा की। अधिकारियों ने इस कार्यक्रम को सराहा और इसे सामुदायिक सहभागिता का एक प्रभावी मॉडल बताया तथा अगली बार जिले के तीन अन्य क्लस्टर दुल्हेड़ा, बादली और खुडण में भी ऐसी ही गतिविधि आधारित पीटीएम करवाने का निर्णय लिया गया।

अंत में, इस अभिनव गतिविधि-आधारित पीटीएम ने न केवल अभिभावकों और विद्यालय के बीच की दूरी को कम किया, बल्कि उन्हें विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण का हिस्सा बनने का अवसर भी दिया। इस कार्यक्रम ने यह साबित किया कि यदि अभिभावकों को सही दिशा और मंच प्रदान किया जाए, तो वे बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से अपना योगदान दे सकते हैं।

जिला निपुण समन्वयक
झज्जर, हरियाणा

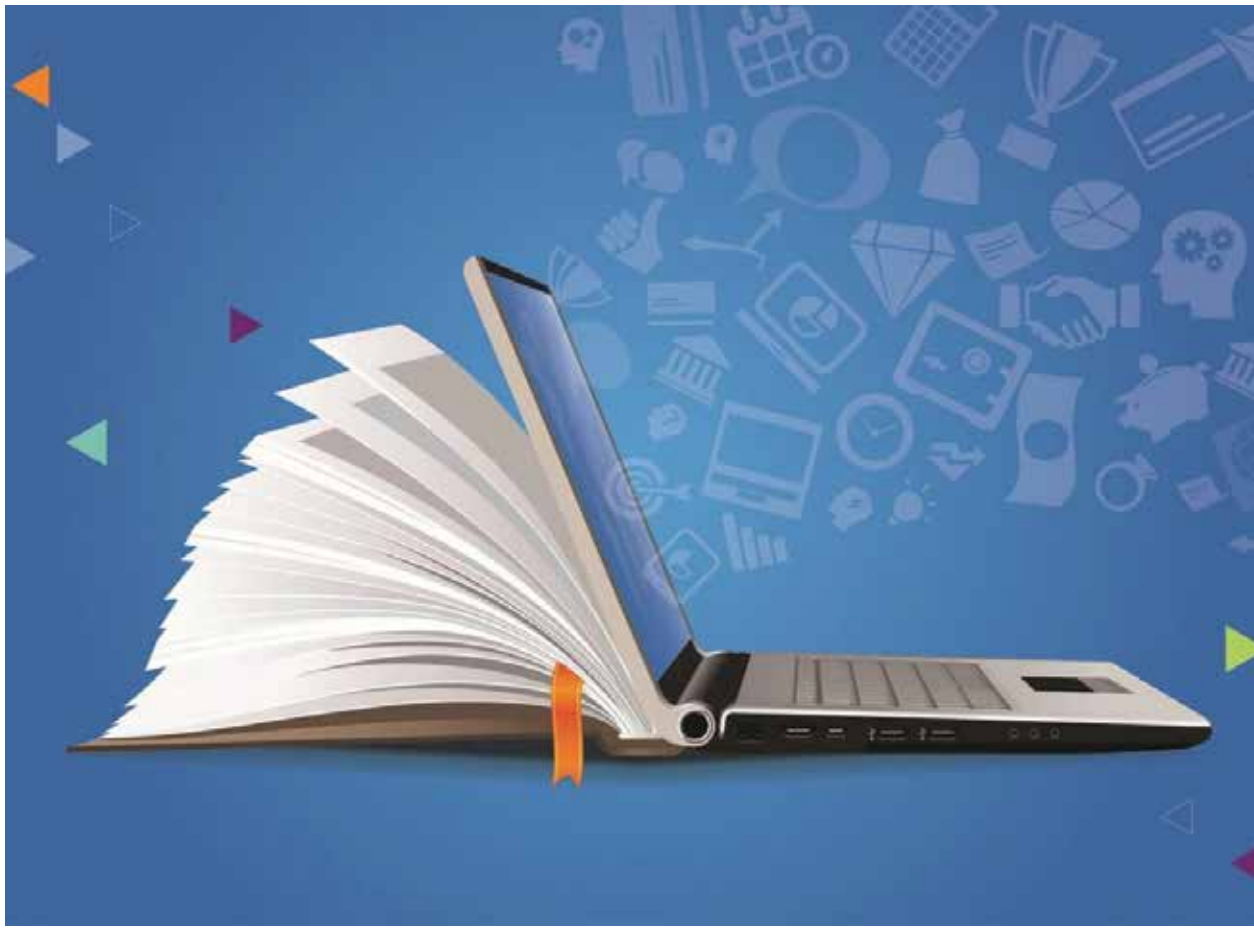

शिक्षा प्रणाली में बढ़ता आईसीटी का महत्त्व

रहमदीन

तेजी से 'डिजिटल' हो रही दुनिया में वैसे तो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का प्रयोग हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में किया जा रहा है। वहीं शिक्षा का क्षेत्र भी अब इससे अछूता नहीं रह गया है। अब वह गुजरे जमाने की बात होने जा रही है कि जब टीचर ब्लैक बोर्ड के माध्यम से अपनी कक्षा के बच्चों को शिक्षा का दान दिया करता था।

डिजिटल युग में कक्षा में बने उस ब्लैक बोर्ड की जगह अब स्मार्ट बोर्ड ने ले ली है। अधिकतर प्राइवेट स्कूलों के लगभग सभी क्लास रूम में तो स्मार्ट बोर्ड या प्रोजेक्टर का उपयोग शिक्षण कार्य में किया जाने लगा है लेकिन धीरे-धीरे अब सरकारी स्कूलों में भी स्मार्ट क्लास रूम जैसी सुविधाएँ विभाग की ओर से मुहैया करवाई जा रही हैं हालांकि इन स्कूलों की संख्या अभी कम ही है, लेकिन भविष्य की अपार संभावनाओं के बीच इनकी संख्या में बढ़ोतरी की जानी होगी।

आज के दौर में, आईसीटी का शिक्षा में उपयोग केवल एक सहायक उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि एक आवश्यक घटक बन चुका है। यह केवल शिक्षक की शिक्षण में मदद ही नहीं करता बल्कि शिक्षार्थी के मन में भी पढ़ने की प्रति रुचि, ललक को बढ़ाता है। ऐसे में अब आईसीटी का प्रयोग शिक्षा प्रणाली के समग्र कार्यान्वयन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भविष्य में, स्कूली शिक्षा में आईसीटी का महत्त्व और भी बढ़ने की संभावना है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और बिग डेटा जैसी नई प्रौद्योगिकियों के आने से शिक्षा का रूप और भी व्यापक और गहन हो जाएगा।

इन तकनीकों के माध्यम से, छात्रों को जहाँ व्यक्तिगत और अनुकूलित सीखने का अनुभव प्राप्त होगा, वहीं उनकी सीखने की गति और परिणामों में सुधार होगा। आने वाले समय में आईसीटी के उपयोग से शिक्षा का क्षेत्र और भी अधिक समृद्ध और व्यापक बनेगा, जिससे समाज का समग्र विकास संभव होगा। आईसीटी का स्कूली शिक्षा में महत्त्व असीमित है। आईसीटी के शिक्षण में प्रयोग से कई प्रकार के लाभ मिल रहे हैं-

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार- आईसीटी के माध्यम से शिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण की विधियों से अलग हटकर नए और नवोन्मेषी तरीकों का उपयोग करने का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए, मल्टीमीडिया उपकरणों जैसे कि वीडियो, ऑडियो, और एनिमेशन का उपयोग, जटिल अवधारणाओं को सरल और सजीव रूप

से समझाने में सहायक हो जाता है। आईसीटी के माध्यम से शिक्षण सामग्री तक किसी भी समय और कहीं से भी पहुँचने की सुविधा, छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को निरंतर और व्यापक बनाती है। इस प्रकार, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है और छात्रों का ज्ञान अधिक गहन और सटीक होता है।

व्यक्तिगत शिक्षण को प्रोत्साहन- आईसीटी के उपयोग से छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षण सामग्री को अनुकूल करने में मदद मिलती है। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्म और विभिन्न सॉफ्टवेयरों के माध्यम से, छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति में उल्लेखनीय सुधार होता है। यह विशेष रूप से ऐसे छात्रों के लिए काफी उपयोगी है, जो पारंपरिक कक्षाओं में पिछड़ जाते हैं। आईसीटी द्वारा प्रदान किए गए इस लचीलेपन से प्रत्येक छात्र अपनी गति और शैली के अनुसार सीख सकता है, जिससे उनकी शिक्षा में व्यक्तिगत रूप से सुधार होता है।

शिक्षकों के लिए समर्थन- आईसीटी ने शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल को विकसित करने और उन्हें निरंतर प्रशिक्षण और विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं। वेबिनार, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, और अन्य डिजिटल संसाधनों के माध्यम से शिक्षक अपने ज्ञान को अद्यतन कर सकते हैं। इसके अलावा, आईसीटी के माध्यम से कक्षा के प्रबंधन, छात्रों के मूल्यांकन और संचार क्षेत्र में भी सुधार हुआ है, जिससे शिक्षकों का समय बचने लगा है और वे अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकते हैं। इस प्रकार, आईसीटी शिक्षकों को पेशेवर रूप से और व्यक्तिगत रूप से समृद्ध करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

समावेशी शिक्षा के लिए लाभदायक- आईसीटी ने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शिक्षा के नए द्वार खोले हैं। विशेष उपकरणों और सॉफ्टवेयर की मदद से दृष्टिहीन, श्रवण बाधित और शारीरिक रूप से दिव्यांग छात्रों को भी सामान्य शिक्षा में शामिल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से, ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों के बच्चों तक भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाई जा सकती है, जिससे शिक्षा में समानता को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार, आईसीटी समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है, जहाँ हर छात्र को समान अवसर मिलते हैं।

डिजिटल साक्षरता और भविष्य की तैयारियाँ- 21 वीं सदी में तो डिजिटल साक्षरता एक महत्वपूर्ण कौशल बन चुकी है। आईसीटी के माध्यम से, छात्रों को न केवल विषय की सामग्री में दक्षता प्राप्त होती है, बल्कि वे डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकी के उपयोग में भी पारंगत हो जाते हैं। यह उन्हें भविष्य में करियर के लिए भी तैयार करता है, जैसा कि हम जानते हैं कि आज के समय में डिजिटल कौशल की माँग लगातार बढ़ रही है। आईसीटी छात्रों को ऐसी व्यावसायिक चुनौतियों के लिए भी तैयार करता है, जो आने वाले समय में उनके सामने खड़ी होंगी। यह उन्हें न केवल तकनीकी रूप से, बल्कि

मानसिक और व्यावसायिक रूप से भी सशक्त बनाता है।

आईसीटी के लाभ- आईसीटी के लाभ बहुत हैं और यह शिक्षा के हर पहलू को समृद्ध करता हैं। यह शिक्षण और सीखाने की प्रक्रिया को अधिक रुचिकर और प्रभावी बना देता है। छात्र अब मात्र पाठ्यपुस्तकों पर ही निर्भर नहीं रहते, वे आईसीटी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के ज्ञान के संसाधनों तक पहुँच सकते हैं, जो उनके सीखने के अनुभव को ओर भी व्यापक बनाता है। उदाहरण के लिए, छात्रों के पास अब ऑनलाइन लाइब्रेरी, शैक्षिक ऐप्स, और इंटरेक्टिव प्लेटफार्म मौजूद है, जो उनके ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

हालांकि, आईसीटी को स्कूली शिक्षा में अपनाने के साथ कुछ चुनौतियाँ भी आती हैं। सबसे बड़ी चुनौती है, उचित संसाधनों और बुनियादी ढाँचे की कमी। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, कंप्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन और अन्य डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता सीमित होती है। इसके अलावा, शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए आईसीटी का प्रभावी उपयोग करने के लिए इसमें आवश्यक प्रशिक्षण की कमी भी एक बड़ी समस्या है। इसके अलावा, डिजिटल डिवाइड भी एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है, जहाँ प्रौद्योगिकी तक पहुँच में असमानताएँ हैं। इससे शैक्षिक समानता में बाधा आती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को साथ मिलकर काम करना चाहिए। सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से आईसीटी के लिए बुनियादी ढाँचे में सुधार किया जा सकता है। साथ ही, इसके लिए शिक्षकों के समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करवाने की आवश्यकता है, ताकि वे आईसीटी के महत्त्व को समझ सकें और इसका अपने शिक्षण व दैनिक जीवन में प्रभावी उपयोग कर सकें। एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने से पारंपरिक और डिजिटल शिक्षण विधियों के बीच संतुलन बना रहेगा, जिससे शिक्षा प्रणाली का समग्र विकास हो सकेगा।

कार्यक्रम समन्वयक
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
शिक्षा सदन, पंचकूला

सुखद स्मृतियों का हिस्सा बन गया मनाली कैंप

विकास शर्मा

शिक्षा केवल कुछ जानकारियों, सूचनाओं की प्राप्ति भर नहीं होती है, बल्कि शिक्षा तो बच्चे के व्यवहार में स्थायी सकारात्मक परिवर्तन का वो माध्यम है, जिससे भविष्य की अज्ञात चुनौतियों से निपटने में सक्षम पीढ़ी को तैयार किया जा सके। इसी ध्येय को सामने रखते हुए हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग लगातार अनेक पाठ्येतर गतिविधियाँ वर्ष भर आयोजित करता रहता है। उन्हीं में से एक अनूठी गतिविधि, समर एडवेंचर कैम्प में भाग लेने का पिछले दिनों सुअवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान हुए अनुभवों को शब्दों में बाँधने का एक प्रयास प्रस्तुत लेख में किया है।

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना पारिषद के तहत, समर एडवेंचर कैंप- 2024, हिमाचल के मनाली में 22 से 26 जून में आयोजित हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी रोहताश वर्मा जी व जिला परियोजना संयोजक संतोष शर्मा के कुशल नेतृत्व में जिला कुरुक्षेत्र की ओर से पचास लड़के, पचास लड़कियों समेत, दो पुरुष और दो महिला शिक्षकों का समूह 21 जून को दोपहर एक बजे नए बस अड्डा, कुरुक्षेत्र से पंचकूला के लिए रवाना हुआ। यात्रा के संबंध में आवश्यक प्रबंध व दिशानिर्देश का दायित्व, यूथ एवम इको क्लब के जिला संयोजक नरेश कुमार का रहा। करीब डेढ़ घंटे की यात्रा के पश्चात पंचकूला के पीएम श्री महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर- 15 पहुँचे।

कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, यमुनानगर, सोनीपत और पंचकूला समेत कुल छह जिले इस फ़ेज़ में शामिल किये गए थे। जिले अनुसार बच्चों के लिए, लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग, कक्ष विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए थे। वहाँ जाकर कुछ जरूरी औपचारिकताओं को पूरा किया गया और तत्पश्चात् सबको रात्रि का भोजन कराया गया। कार्यक्रम अधिकारी श्री रामकुमार जी व अन्य अधिकारियों द्वारा कैंप के संबंध में आवश्यक निर्देश अध्यापकों को दिए गए। कैंप अलॉट करने का कार्य हुआ, बस संख्या और चालक का दूरभाष नंबर नोट कराया गया। जिला परियोजना संयोजक, पंचकूला की ओर से यहाँ सब व्यवस्थाएँ बहुत अच्छे से की गई थीं। न केवल गुणवत्ता के अनुसार भोजन बहुत अच्छा था, बल्कि सब अधिकारी कर्मचारी भी वहीं मौजूद थे और प्रत्येक व्यवस्था को स्वयं देख रहे थे। बाद में 27 जून को चंडीगढ़ पहुँचने पर भी उक्त कार्यालय द्वारा अच्छी व्यवस्था की गई थी। रात्रि 11 बजे सब बसें एक साथ मनाली के लिए रवाना हुईं। लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग बसें थी। लड़कियों के साथ दो महिला शिक्षक और लड़कों के साथ दो पुरुष शिक्षक सवार थे। विभाग द्वारा बड़ी और आरामदायक सीट वाली अच्छी बसों का प्रबंध किया गया था। सुबह 7 बजे हम मनाली पहुँचे। मनाली से कुछ दूरी पहले भानु पुल के पास, व्यास नदी के साथ ही हमारा कैंप था। कैथल जिले के बच्चों को भी उसी प्रांगण में ठहराया गया था। करनाल जिले के बच्चों को भी इसी कैंप में ठहराया गया था। जाते ही बच्चों को लड़के-लड़कियों के अनुसार अलग-अलग विंग में टेंट नियत कर दिए गए, गेट के साथ ही शिक्षकों के लिए टेंट रखे गए ताकि विद्यार्थियों की गतिविधियों पर

बेहतर निगरानी की जा सके।

ऐसे कैंप में बच्चे जो स्वप्रबंधन और आत्म अनुशासन सीखते हैं, वह सुखद आश्चर्य से भरने वाला होता है। बच्चों को पहले ही दिन कैंप के बारे, उनकी भूमिका बारे बता दिया गया था, उनको समूहों में विभक्त कर दायित्वों का बँटवारा कर दिया गया था। इसके तुरंत बाद बच्चों ने ऐसी कुशलता से अपने दायित्वों को निभाया, मानो लंबे समय से वे इस व्यवहार को करते आ रहे हों।

सुबह साढ़े पाँच बजे पहली सीटी के साथ बच्चे उठते हैं, तैयार होते हैं और फिर अगली सीटी पर एक साथ टेंट से बाहर मैदान में एकत्र हो जाते हैं। बच्चों को कुछ सामान्य निर्देश दिए जाते हैं और फिर वर्जिश और योग का सत्र शुरू हो जाता है। कैंप के कई बच्चे अच्छे खिलाड़ी थे, सुबह के अभ्यास सत्र में ये बच्चे बहुत अच्छे से सबको भाँति-भाँति की वर्जिश कराते थे। साथ के कई शिक्षकों की योग में महारत थी, वे भी प्रातः के सत्र में बच्चों को योगासन और प्राणायाम का अभ्यास कराते थे। इन गतिविधियों से बच्चे पूरे दिन के लिए आवश्यक ऊर्जा और स्फूर्ति पाते हैं। अध्यापक भी हर गतिविधि में बराबर भाग लेते हैं। इसके पश्चात् हल्की जॉगिंग के लिए बच्चों को व्यास नदी के साथ बने रास्ते पर ले जाया जाता है।

फिर बच्चे फ्रेश होते हैं, स्नान इत्यादि करते हैं और तैयार होकर आते हैं। बच्चों का एक समूह अपनी ड्यूटी सँभालता है और इस प्रकार से सुबह का नाश्ता शुरू हो जाता है। भोजन सादा पर पौष्टिक और आसानी से पचने वाला होता है। भोजन के पश्चात् बच्चे बर्तन भी नियत स्थान पर ही रखते हैं। सारे टेबल और खाने की जगह की साफ-सफाई की जाती है। इस तरह से कैंप के उद्देश्यों के अनुरूप सारा कार्य बच्चों द्वारा स्वयं से ही किया जाता है। बच्चे बहुत जल्दी प्रशिक्षकों को ध्यान से सुनना, उनके निर्देशों के अनुसार व्यवहार करना सीख जाते हैं। बच्चों को सामान्य शिष्टाचार, समूह के नियम, कैंप के रखरखाव के बारे बताया जाता है। बच्चे कैंप में हर समय कुछ सीख रहे होते हैं, बदल रहे होते हैं। एक क्षेत्र के बच्चे अन्य क्षेत्रों के बच्चों से मिलते हैं और बहुत जल्दी मित्र हो जाते हैं। सुबह समय से उठने से लेकर, पूरे दिन विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रहने के बाद भी बच्चों को न थकान होती है और न उनके हौसले में कमी आती है।

कैंप में बच्चों ने रॉक क्लाइंबिंग, लैडर क्लाइंबिंग,

रैपलिंग, पैरेलल रोप, फ्लाइंग फॉक्स, ज़िप लाइन, जैमरिंग, रिवर क्रॉसिंग जैसी साहसिक गतिविधियों का प्रशिक्षण लिया और अभ्यास किया। अधिकांश बच्चे सरलता से गतिविधि कर जाते थे पर कुछ बच्चे आरंभिक घबराहट अनुभव करते थे, जिसे प्रशिक्षकों द्वारा उनसे बात करके, उन्हें प्रोत्साहित करके दूर कर दिया जाता था और इस तरह से सभी बच्चे निर्धारित गतिविधियों को करने में सफल हो जाते थे।

प्रकृति की गोद में एडवेंचर कैंप जीवन में नूतन सौन्दर्य-बोध जोड़ता है तो विशेष स्थितियों से जूझने का कौशल भी देता है। झरनों से बहता कल-कल करता पानी बच्चों की कल्पनाओं को सदैव सजीव रखता है। कुछ बच्चे जो शायद कभी अपने जिले से भी बाहर न निकले हों, वे मनाली में एक कैंप में आकर जो खुशी महसूस करते हैं, अपने विद्यालय को मन ही मन जितना आभार व्यक्त करते हैं, उसका सहसा अंदाज़ा कठिन है। बच्चों के माता-पिता जब वीडियो कॉल के जरिए बच्चों से बात करते हैं, पृष्ठभूमि में पर्वत, नदी देखते हैं तो उनकी आँखें चमक उठती हैं।

कैंप में भाग लेने वाले बच्चों की अपने-अपने क्षेत्र में चाहे फिर वे शैक्षणिक हो, खेलों से जुड़ी या फिर अन्य गतिविधियों में हो, खास उपलब्धियाँ रही होती हैं। सब बच्चों को लगता है सिस्टम में उनकी भी पूछ है, समुचित हिस्सेदारी है।

बच्चों के साथ आने का हम शिक्षकों के लिए भी एक नूतन अनुभव रहता है। हम अपने साथ के शिक्षकों से मिलते हैं। उन्हें कई स्तर पर जानते हैं और उनसे प्रेरणा पाते हैं। बच्चों का एक बड़ा समूह कैसे नियंत्रित किया जा सकता है, उनको सुबह से शाम तक कैसे गतिविधि में संलग्न रखा जा सकता है, बच्चों की खूबियों को पहचानने हुए उनको उसके अनुसार दायित्व देना और अनुशासन के साथ ही प्रसन्नता और ऊर्जा पूर्ण वातावरण बनाकर रखना भी सीखते हैं। अक्सर बच्चों की प्रतिभाएँ हैरान करती हैं और खुशी से भर जाती हैं। अलग-अलग विद्यालयों से आए बच्चों के साथ एक संबंध बन जाता है। बच्चे यहाँ कई बार विद्यार्थी तो कई बार बराबर के सहयोगी से लगते हैं।

शाम को रोजाना सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं। पहले तो सीमित संख्या में बच्चों की भागीदारी होती है फिर जैसे दिन बीतते हैं, यह भागीदारी बढ़ती जाती है। कैंप में आया हरेक बच्चा विशेष है, धीरे-धीरे सब बच्चों की अपनी खास पहचान स्थापित होने लगती है। बच्चों ने कैंप में सीखा कि कैसे सीमित संसाधनों में भी व्यवस्थित होकर रहा जा सकता है। कैसे दूसरों की स्वतंत्रता को बाधित किए बिना अपने अपने हिस्से के खुलेपन को

एंजॉय किया जा सकता है। बच्चों की जैसे-जैसे कैंप के भाव में प्रगाढ़ता आती जाती है, उन्हें ये लगने लगता है कि काश ये कैंप और आगे बढ़ पाता। बच्चे एक नयी दुनिया को अपने भीतर उदित हुआ पाते हैं। इसलिए चाहे खंड स्तर पर हो या फिर ज़िला या राज्य स्तर पर, ऐसे अधिकाधिक कैंप आयोजित होने चाहिए और अधिकतम बच्चों को इनमें भाग लेने का अवसर देना चाहिए।

मनाली समर कैंप में बच्चों को स्थानीय संस्कृति और प्रकृति से परिचित कराने के लिए कई आसपास के स्थलों का भी अवलोकन कराया गया। व्यास नदी के बारे, हिमालय के विस्तार, उसकी मिट्टी, उसके पेड़ों और वन्य जीव-जंतुओं के बारे बच्चों ने बहुत सी जानकारियाँ स्वयं से, नेट के जरिये, स्थानीय लोगों से बात करके या अध्यापको के माध्यम से पाईं। बच्चों ने तीन किलोमीटर की ट्रैकिंग की और पारसा का ऊँचाई से गिरता सुंदर झरना देखा। करीब इतना ही लम्बा ट्रैक जगतसुख का भी था, जहाँ बच्चों ने माँ गायत्री के मंदिर के दर्शन किए। संयोग से उस दिन वहाँ एक बड़ा उत्सव चल रहा था। अपने लोक देवताओं और संस्कृति के प्रति हिमाचल के लोगों की आस्था देखकर सब बच्चे बहुत प्रभावित हुए। वापसी में बच्चे सेब और खुबानी के बगीचों के बीच से होकर आए। सेब की किस्मों और उसके मनाली क्षेत्र में उत्पादन के संबंध में बच्चों ने अनेक बातें स्थानीय लोगों से मालूम की। बच्चे घूमने और नई जगह देखने के लिए तो हमेशा उत्सुक रहते ही थे पर जिस दिन उन्हें मनाली नगर के भ्रमण पर ले जाया जाना था, उनका उत्साह देखते ही बन रहा था। सब बच्चे समय से पहले उस दिन उठे थे, खूब अच्छे से तैयार हुए थे। मनाली पहुँचकर बस स्टेंड से बच्चे सीधे हिडिंबा मंदिर गए, फिर माल रोड पर समय बिताया। सिद्धू, टुडकिया भाठ व धाम जैसे स्थानीय पकवानों का आनंद भी बच्चों ने लिया। बच्चों की खुशी उनकी आँखों से झलक रही थी। बच्चे उन खुशनुमा पलों को, वहाँ की प्रकृति को अपने फोन में लगातार कैद कर रहे थे।

आखिरी दिन जब कैंप का समापन था, कैथल, करनाल और कुरुक्षेत्र ने संयुक्त कार्यक्रम का आयोजन किया। बच्चों ने कैंप के बारे अपने अनुभव साझा किए, गीत-ग़ज़ल और रागिनी की प्रस्तुति दी। हरियाणवी नृत्य हुए, बच्चों ने अपूर्व समा बाँधा। इस कार्यक्रम में बतौर उद्घोषक -संयोजक मेरी भी उपस्थिति रही। सब प्रस्तुतियों को नज़दीक से देखने सराहने का अवसर मिला और स्वयं भी हरियाणवी गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में इसके बाद भाग लेने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों को सहभागिता प्रमाणपत्र वितरित किए गए। करनाल से हमारे वरिष्ठ सहयोगी सियाराम जी ने बच्चों को संबोधित किया। उन्होंने अपने अनुभव बच्चों से साझा करते हुए बच्चों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में प्रकृति संरक्षण का व्रत लें और मुश्किल परिस्थितियों में साहस का परिचय दें। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम और भी लंबा हो सकता था परन्तु बूँदें शुरू होने लगी थी, इसलिए थोड़ा संक्षिप्त करके इसे समेटना पड़ा। बच्चों का पर ऐसा उत्साह था कि बूँदें भी आती रहीं पर अपनी जगह से कोई बच्चा न हिला। कैंप में सीखी बातें, उनके व्यवहार में साफ दिखाई दे रही थीं। बच्चों ने शाम को भोजन से पहले एक बार फिर अपने-अपने जिले के कैंप में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया। देर तक सबने जी भरकर नृत्य किया, कैंप को लेकर भाव व्यक्त किए। शिक्षकों ने भी बच्चों से बात की, आगामी जीवन के लिए कुछ सूत्र व शुभकामनाएँ दीं, वापसी की यात्रा के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए।

बच्चों ने फिर अपनी अपनी पैकिंग की, भोजन लिया और रात्रि दस बजे वहाँ से प्रस्थान किया। सुबह 5 बजे सब सेक्टर 17, चंडीगढ़ बस अड्डे उतरे। इस समय भी विभाग की ओर से नाश्ते की सुविधा सब बच्चों के लिए की गई थी। अच्छे से तैयार, बढ़िया से पैक स्वादिष्ट आलू-पूड़ी का नाश्ता सबने किया। उसके पश्चात् सात बजे के आसपास हमने अपने जिले, कुरुक्षेत्र के लिए बस ली। नौ बजे हम कुरुक्षेत्र थे। बच्चों ने अपने अभिवावकों को सूचित कर दिया था। दस बजे तक सब बच्चे अपने अपने घर को रवाना हो गए थे।

और इस तरह से एडवेंचर कैंप की हमारी यात्रा का समापन होता है। बच्चों ने और हम शिक्षकों ने इस कैंप से बहुत कुछ नया सीखा, जीवन की जड़ता टूटी और एक नवोन्मेष स्वयं में हम सबने पाया। मनाली की सुन्दर घाटी में जो मनोरम दृश्य हम सबने देखे, वे लंबे समय तक हमारी सबसे सुंदर स्मृतियों का हिस्सा रहेंगे। भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों से जुड़ने की उत्कट अभिलाषा अब रहेगी।

पीजीटी अंग्रेजी
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बाबैन, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

छात्राओं ने लगाई पेंटिंग प्रदर्शनी दिये गंभीर संदेश

फतेहाबाद की एमपी रोही विद्यालय में लगाई गई प्रदर्शनी, ज़िला शिक्षा अधिकारी संगीता बिश्नोई ने किया उद्घाटन

डॉ.सुमन कादयान

बाल चित्रकारों के मन पर आसपास के वातावरण का प्रभाव भी पड़ता है। जो बच्चा देखता है, भोगता है या महसूस करता है उसे अपने चित्रों में स्थान देता है। हालांकि बच्चों की चित्रकारी के मुख्य विषय पेड़-पौधे, चिड़िया, बिल्ली, चूहा, पहाड़, झरने, पतंग, झूले, तितली, बादल, फूल आदि होते हैं, किन्तु थोड़ी परिपक्वता आने पर बच्चा या किशोर पूरे परिवेश को जानने, समझने लगता है। उसकी यही परिपक्वता उसके चित्रों में आने लगती है। वह सामाजिक बुराइयों, आडंबरों, बढ़ते प्रदूषण, छल-कपट को अपने चित्रों के विषय बनाकर उनके खिलाफ लड़ना आरंभ करता है, तो पर्यावरण सरंक्षण पर गंभीरता से सोचता है। बच्चों के चित्रों में उनकी अभिव्यक्ति झलकती है। ऐसी ही अभिव्यक्ति की झलक, पर्यावरण व भटकते हुए समाज की चिन्ता पिछले दिनों छात्राओं द्वारा बनाई पेंटिंग प्रदर्शनी में देखने को मिली। फतेहाबाद के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मोहम्मपुर रोही में कला शिक्षक, शिक्षाविद डॉ. ओमप्रकाश कादयान के प्रयासों से लगी पेंटिंग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें

कक्षा छठी से बारहवीं की कलाकार छात्राओं ने अपने द्वारा बनाए चित्र प्रदर्शित किए। करीब 200 चित्रों की इस प्रदर्शनी का उद्घाटन फतेहाबाद की जिला शिक्षा अधिकारी, संगीता बिश्नोई ने किया। अध्यक्षता प्राचार्य व शिक्षाविद भगवान दत्त ने की। बाल व किशोर चित्रकारों द्वारा लगाई गई इस प्रदर्शनी को करीब 500 छात्र-छात्राओं द्वारा देखा गया।

बारहवीं कक्षा की छात्रा करिश्मा द्वारा बनाए कई चित्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य, कुदरत का करिश्मा, प्रकृति की सत्ता को दर्शाया है। एक पेंटिंग में गहरे जंगल के बीच से बहती नदी से एक बाघ पानी पीकर अपनी प्यास मिटा रहा है। बाघ पानी पीता-पीता नदी में तैर रही दो बड़ी बत्तखों को भी देख रहा है। जंगल के बीच से हरे पड़ों के ऊपर नीले आसमान में कुछ बादलों के झुण्ड दिखाई दे रहे हैं। जैसे वे जल्दी ही पूरे आसमान में छाकर पानी बरसा कर पूरे जंगल की प्यास मिटाने की तैयारी कर रहे हैं। नदी के पानी में पेड़ों व बादलों का सुन्दर बिंब आकर्षण पैदा कर रहा है। दूसरे चित्र में हरे-भरे जंगल के किनारे एक मकान की ग्रिल पर एक सुन्दर रंग-बिरंगी चिड़िया बैठी है, साथ में ढ़ेर सारे बड़े आकार के रंग-बिरंगे खिले फूल पेंटिंग को आकर्षक बना रहे हैं। बहुत से पंछी मुक्त गगन में उड़ान भर रहे हैं। करिश्मा ने अन्य पेंटिंग में ऊर्जा सरंक्षण का सन्देश दिया है। उसमें रंगों के माध्यम से बताया है कि ऊर्जा की बचत नहीं की गई तो हमें बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। एक अन्य छात्रा सुशीला ने एक शहर की बहुमंज़िला कंकरीट की इमारतें, सड़क पर वाहनों की भरमार तथा उनसे निकलने वाला जहरीला धुआँ दम घोटता दिखाया है। किशोर कलाकार ने दिखाया है कि बढ़ती इमारतों के कारण जंगल कम हो रहे हैं। पीने का पानी भी ज़हरीला व कम हो रहा है। लाल रंग से बनाया आसमान खतरे का संकेत है। कलाकार ने पानी बचाने की प्रेरणा भी दी है। दूसरी पेंटिंग में नशे के दुष्परिणाम को दर्शाया है कि जो नशा करता है उसका मान-सम्मान, धन, स्वास्थ्य सब कुछ प्रभावित होता है तथा परिवार को भी भुगतना पड़ता है। बारहवीं कक्षा की ही छात्रा पूनम की रचना में भारी जंगलों से लदे पहाड़ों के सामने बनी प्राकृतिक झील में छोटे से टापू पर एक नवयुवती पत्थर पर बैठी प्राकृतिक सुषमा का रस-पान कर रही हैं। ठंड का एहसास करने के लिए पैर पानी में डुबाए हुए है। दोनों ओर भारी जंगल, फूलों से लदी जंगली झाड़ियाँ, दूसरी ओर साफ नीले पानी की झील तथा पीछे ग्लेशियरों से अटी पड़ी पर्वत चोटियाँ चित्र को सुन्दरता व आकर्षण पैदा कर रहे हैं। जंगल के आगे मादा जेबरा व उसका बच्चा निश्चिंत खड़े दिखाए हैं। एक अन्य पेंटिंग में कुछ कटे हुए, कुछ सूखे हुए

पेड, काले रंग में दिखाए हैं। ज़मीन पेड़ों के बिना बंजर, धूसर, लाल-पीले रंग में दिखाई है। इसका असर आसमान पर भी नज़र आ रहा है। सूरज का प्रकाश मंद पड़ गया है तथा पहाड़ भी बंजर दिखाए गए हैं। कलाकार ने दिखाया है कि पेड़ों के बिना जीवन व खुशहाली मुमकिन नहीं है। बारहवीं की मनीषा ने चाँदनी रात का विहंगम दृश्य बनाया है। आसमान में बड़े प्रिज्म-सा या फिर सफेद मोती-सा चमकता चाँद, टिमटिमाते असंख्य तारे, पेड़ों के झुरमुटों से झाँकती हुई चाँदनी, पेड़ों की टहनियों व पत्तों पर पड़ी चाँदनी इनका एक भाग उज्ज्वल कर रहे हैं तो परछाई काले रंग से दिखाई है। जमीन पर पड़ी रोशनी को कलाकार ने बड़े दक्षतापूर्वक उजले रंगों से चित्रित किया है। एक तरफ पानी में चन्द्रमा का प्रतिबिंब, उससे आगे घास के तिनकों की बनावट अच्छी लग रही है। कुल मिलाकर मनीषा की पेंटिंग देखने में सुन्दर लग रही है जैसे कार्तिक पूर्णिमा की खिली-खिली रात को किशोर कलाकार ने आकर्षक रूप दिया है।

कुशल चित्रकार चंचल नशे के खिलाफ रंगों से जंग लड़ती नज़र आती है। कुछ लोग होते हैं जो ज़िंदगी को सिगरेट, बीड़ी, चिलम के धुएँ में यूँ ही उड़ा देते हैं। इस कलाकार ने धुएँ में घुलती ज़िंदगी को दक्षतापूर्वक चित्रित किया है। दूसरी ओर एक अन्य पेंटिंग में शराब में डूबा जीवन, बर्बाद होता घर, धूमिल होता सम्मान, खराब होती आर्थिक स्थिति को एक कुशल चित्रकार की भाँति चित्रित किया है। रेणुका को चित्रों में गहरे रंग भरने की आदत है। इसका विषय भी गंभीर हैं। उसने दिखाया है कि प्रकृति का किसी भी तरह का नुकसान समस्त प्राणी जगत का नुकसान है। बारहवीं कक्षा की रहमत ने अपने चित्रों में प्रकृति के खूबसूरत रंग आकर्षक तरीके से कागज़ पर उतारे हैं। उसकी पेंटिंग देखकर दर्शक को एहसास होता है कि प्रकृति इतनी सुंदर है- पहाड़ों पर जमी बर्फ, झील में नौका विहार, फूलदार पौधों की कतारें, बादल छाए नभ में उड़ती पंछियों की कतारें तथा पहाड़ों की तलहटी में हरे भरे जंगल अच्छे लग रहे हैं। पूजा ने भी कुछ इसी तरह के चित्र बनाए हैं। ग्यारहवीं कक्षा की खुशी एक कुशल चित्रकार है। उसने शहीद भगत सिंह, छत्रपति शिवाजी के सुन्दर चित्र बनाए हैं जो देशभक्ति के भाव जगाते हैं तो वीरता का एहसास करवा रहे हैं। एक चित्र में श्रीमद्भगवद् गीता के महत्त्व व हमारे जीवन पर उसके प्रभाव को खूबसूरती से दिखाया है। एक अन्य चित्र में दिखाया है कि सिगरेट का धुआँ जीवन को काला करके जीवन में खुशहाली के समस्त रंग गायब कर देता है। नौवीं कक्षा की मोनिका ने सूर्योदय-सूर्यास्त के समय का स्वर्णिम वातावरण तथा बसंत के इन्द्रधनुषी रंग कुशलता से चित्रित किए हैं। बसंत नाम की एक पेंटिंग के माध्यम से बाल कलाकार ने अपने रंगों से दर्शाया है कि हमें बसंत के फूलों की तरह सकारात्मक दृष्टिकोण लेकर अपने व दूसरों के जीवन को महकाना चाहिए। बसन्त जीवन, ऊर्जा, उत्साह का प्रतीक होता है।

नौवीं कक्षा की रेनू व हिमानी के चार चित्रों में प्रकृति सुषमा के साथ-साथ जनजीवन के दृश्यों को महत्त्व दिया है। प्रकृति व संस्कृति का अद्भुत तालमेल होता है। यही सामंजस्य इन बाल कलाकारों ने अपने चित्रों में दिखाया है। अनुराधा, रितू, सीमा व सूरजमुखी ने अपने चित्रों में हमारे समाज में फैली बुराइयों के खिलाफ रंगों के माध्यम जंग लड़ी है। इससे पता चलता है कि समाज में बुराइयाँ कोढ़ की तरह फैली हैं। आसमान रंग-बिरंगा दिखाया है। जैसे इन्द्रधनुष के सभी रंग इस पेंटिंग में समा गए हों। देवदार के ऊँचे पेड़, झोंपड़ीनुमा मकान, धुँधलके से झाँकते खेत, अनेक रंगों में घिरी पर्वत मालाएँ, खग-वृंदों का नभ नापता समूह, विभिन्न रंगों में चमकते नदी किनारे पड़े पत्थर एक दिव्य मंजर प्रस्तुत कर रहे हैं। सातवीं कक्षा की साक्षी, वंशिका व पूजा ने अपने चित्रों में पानी के महत्त्व को समझाया है। इन्होंने दिखाया है कि पानी के बिना हम ज्यादा देर तक जीवित नहीं रह सकते। उन्होंने प्रदूषित वातावरण की हानियाँ तथा साफ-सुथरे वातावरण के फायदे चित्रों के माध्यम से ही बताए हैं।

निःसंदेह इस तरह की प्रदर्शनियाँ जहाँ बाल कलाकारों को प्रोत्साहित करती हैं, वहीं हम सबको बहुत कुछ सोचने तथा सुधार करने पर मजबूर करती हैं। बालमन की छटपटाहट को अगर हम समझें तो यह समस्त सृष्टि के लिए फायदेमंद होगा।

180, मार्वल सिटी
हिसार, हरियाणा

'सेव एनर्जी' पर पेंटिंग प्रतियोगिता

शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार भाखड़ा व्यास मैनेजमेंट बोर्ड के दिशा निर्देशन में राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा फरीदाबाद की सैंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड, जूनियर रेडक्रॉस और गाइड्स ने प्राचार्य रविंद कुमार मनचंदा की अध्यक्षता में ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी के अंतर्गत ऊर्जा संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम में पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की। प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा ने कहा कि ऊर्जा मंत्रालय एवं ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी द्वारा प्रत्येक वर्ष ऊर्जा संरक्षण के लिए युवाओं को जागरूक किया जाता है तथा लोगों को ऊर्जा-संरक्षण और ऊर्जा दक्षता के महत्त्व के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के लिए, समग्र विकास के लिए जरूरी समग्र प्रयासों के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। उन्होंने कहा कि बच्चे और युवा देश का भविष्य हैं और बच्चों को शिक्षित करने और उन्हें ऊर्जा बचाने के उपाय सिखाने से अच्छा कोई विचार नहीं हो सकता। ऊर्जा के संरक्षण के बारे में बात करते समय न्यून ऊर्जा का उपयोग करना, पुनः उपयोग करना व पुनर्चक्रण के विषय में अवगत कराना हैं। बिजली के उपकरणों को उस समय बंद रखें, जब उनकी आवश्यकता नहीं है। ऊर्जा कुशल शैली अपनाने से भारत को ऊर्जा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिये एक सकारात्मक प्रेरणा मिलेगी। ऊर्जा दक्षता हस्तक्षेप कम कार्बन संक्रमण हेतु सबसे न्यून लागत और प्रभावी साधनों में से एक है। प्रतियोगिता में इल्लीमा को प्रथम, पलक को द्वितीय तथा पुलक कुमारी को तृतीय घोषित किया गया तथा प्राध्यापकों श्रीपाल, निखिल, अमित शर्मा, धर्मपाल सहित सभी अध्यापकों और प्रतिभागी छात्राओं का ऊर्जा संरक्षण के लिए जागरूक होने के लिए आभार व्यक्त किया गया तथा सभी से सेव एनर्जी के लिए जागरूक रहने की अपील की गई।

- शिक्षा सारथी डेस्क

आनन्ददायी शिक्षा का केंद्र बना प्रेमनगर विद्यालय

अरुण कुमार कैहरबा

बच्चों को आनंददायी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूलों का सक्षम और सुंदर होना बेहद जरूरी बात है। कोई भी स्कूल अच्छा तभी बनता है, जब वहाँ पर नवाचारी अध्यापक होते हैं। स्कूल मुखिया और अध्यापक मिलजुल कर अपने स्कूल का वातावरण ऐसा बनाते हैं और ऐसी गतिविधियों का संचालन करते हैं, जिससे बच्चों को अपने स्कूल से स्नेह हो जाता है। करनाल में प्रेम नगर स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला इस मामले में मिसाल बन गया है। मुख्य शिक्षक रामनिवास सोलंकी के नेतृत्व में स्कूल नई ऊँचाइयाँ चढ़ रहा है। स्कूल में संसाधनों की कमी जन सहयोग से पूरी की जाती है। सामाजिक संस्थाओं के साथ-साथ अध्यापक भी आर्थिक सहयोग के जरिये विद्यार्थियों का प्रोत्साहन करते हैं। स्कूल में कोई भी कार्य दिवस ऐसा नहीं होता, जब प्रातःकालीन सभा या अन्य मंचों के जरिये विद्यार्थियों को विभिन्न तरीकों से प्रोत्साहित नहीं किया जाता हो। सदन व्यवस्था भी स्कूल की खूबियों में से एक है।

लेखक ने जब स्कूल में प्रवेश किया तो गेट की तरफ से ही स्कूल में जा रहे एक बच्चे ने अभिवादन के साथ जोरदार स्वागत किया। पता चला कि वह पाँचवीं सैक्शन-ई का विद्यार्थी जतिन है। विद्यार्थी से पूछा गया तो उसने उत्साहपूर्वक जानकारियाँ दीं। जतिन ने बताया कि उसे अपना स्कूल बहुत पंसद है। पसंद होने का कारण यह है कि अध्यापक बच्चों की बहुत फिक्र करते हैं। उनसे पूछा गया तो बताया कि सबसे ज्यादा उन्हें स्कूल

के मुखिया रामनिवास सोलंकी अच्छे लगते हैं, क्योंकि वे सभी बच्चों से प्यार करते हैं। जतिन ने बताया कि हिन्दी विषय को पढ़ते हुए उसे आनंद आ जाता है। जतिन ने सहर्ष मुख्य शिक्षक के कार्यालय तक पहुँचाया।

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला में जून-2014 में 450 के करीब विद्यार्थी थे। राम निवास सोलंकी के मुख्य शिक्षक के रूप में जिम्मेदारी सँभालने के बाद हर वर्ष अध्यापकों के सहयोग से विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने पर काम किया गया। स्कूल में ऐसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं और स्कूल में शिक्षा का स्तर उठाने के लिए विशेष प्रयास किए गए, जिनसे आज स्कूल में 747 विद्यार्थी हैं, जिनमें से 346 लड़के और 401 लड़कियाँ हैं। स्कूल में आस-पास के निजी स्कूलों में पढ़ने वाले अनेक बच्चे दाखिल हुए हैं। एक बार जो बच्चा स्कूल में आ जाता है, वह यहीं का हो जाता है। स्कूल में कुल 24 अध्यापक और सात मिड-डे-मील वर्कर हैं। स्कूल में एक भी सफाई कर्मचारी नहीं है। सफाई व्यवस्था में अध्यापक व विद्यार्थी सक्रिय सहयोग करते हैं। स्कूल में प्रवासी मजदूरों के बहुत से बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करते हैं। इनमें 55 विद्यार्थी तो अकेले बिहार राज्य के हैं।

स्कूल के विकास में स्कूल प्रबंधन कमेटी व अभिभावकों का सक्रिय सहयोग रहता है। एसएमसी व पीटीएम की बैठकों में हिस्सेदारी के लिए अध्यापक अभिभावकों और एसएमसी सदस्यों को प्रेरित करते हैं। साल में एक बार डोर-टू-डोर जनसंपर्क किया जाता है। इस अभियान में अध्यापकों के साथ-साथ एसएमसी सदस्य भी हिस्सा लेते हैं।

सदन व्यवस्था-

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला प्रेमनगर में अध्यापकों को नए ढंग से सोचने और उस सोच को क्रियान्वित करने, विद्यार्थियों को नेतृत्व प्रदान करते हुए उनकी ऊर्जा का सही इस्तेमाल करने के लिए चार सदन बनाए गए हैं। इन सदनों का नामकरण संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर, शहीद भगत सिंह, अंतरिक्ष परी कल्पना चावला और झाँसी की रानी

लक्ष्मीबाई के नाम पर किया गया है ताकि विद्यार्थियों को इनके जीवन से प्रेरणा मिल सके। हर एक सदन का अलग रंग है। सदन के अनुसार विद्यार्थियों की अलग-अलग रंगदार वर्दी है, जिसे विद्यार्थी सोमवार, बुधवार और शनिवार को पहनते हैं। सदन के अध्यापक प्रभारी होते हैं। प्रत्येक सदन के पाँच से छह अध्यापक प्रभारी हैं। विद्यार्थियों में एक सदन का हाउस कैप्टन व एक वाइस कैप्टन होता है। विद्यार्थियों में ही एक ड्रम-पीटी इंचार्ज होता है, जोकि प्रार्थना व पीटी आदि करवाता है। हर दिन हाउस बदलता है और वही हाउस प्रार्थना व सभा आदि का संचालन करता है। सदन से जुड़े विद्यार्थी एक दिन पहले अपने कार्यक्रम की तैयारी करते हैं। विद्यार्थियों की विशेष प्रस्तुतियाँ होती हैं। विशेष दिवसों पर विशेष आयोजन होते हैं। विद्यार्थियों को हर रोज की पुरस्कार देकर पुरस्कृत भी किया जाता है। सदनों में अंतर-सदन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

स्कूल में बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिमाह एक बार अध्यापकों व बच्चों का जन्मदिन समारोह सामूहिक रूप से धूमधाम से मनाया जाता है। जन्मदिन पर बच्चों को शुभकामना प्रमाण-पत्र और उपहार प्रदान किए जाते हैं। स्कूल में बच्चों के लिए जन्मदिन समारोह खास होता है, जिसे वे कभी भूल नहीं पाते हैं। स्कूल से पाँचवीं कक्षा पास करके दूसरे स्कूलों में गए बच्चे

भी स्कूल में आते हैं। अध्यापक उनका जन्मदिन मनाने में भी संकोच नहीं करते। अपने जन्मदिन पर अध्यापक स्वैच्छिक रूप से एक हज़ार रुपये का आर्थिक सहयोग जमा करवाते हैं। इस आर्थिक सहयोग को विद्यार्थियों के उत्सावर्धन के लिए अध्यापकों द्वारा बनाई गई व्यवस्था के अनुसार खर्च किया जाता है। अध्यापक स्कूल में वार्षिक भंडारे का आयोजन करते हैं। जिसमें बच्चों की इच्छानुसार स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जाता है। इन भंडारों में केवल स्कूल के ही बच्चे व अध्यापक नहीं, बल्कि पास के दो वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल के अध्यापक व बच्चे भी शामिल होते हैं।

स्काउटिंग में हिस्सा लेते हैं बच्चे-

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला

प्रेमनगर के बच्चों का स्काउटिंग की गतिविधियों में सक्रिय हिस्सेदारी रहती है। स्कूल के सैकड़ों बच्चों ने कब-बुलबुल के शिविरों में हिस्सा लिया। अनेक बच्चों को कब बुलबुल प्रार्थना, कब प्रतिज्ञा, कब नियम आदि याद हैं। शिविरों में बच्चों में एक दूसरे के साथ मिककर

काम करने व सीखने का भाव पैदा हुआ है। उनका दायरा विस्तृत हुआ है। वे स्काउटिंग के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय हिस्सेदारी करते हैं। कब बुलबुल का सबसे बड़ा गोल्डन एरो अवार्ड स्कूल के सौ के करीब बच्चों को मिल चुका है। वर्ष 2023 में 14 बच्चों को जिला शिक्षा अधिकारी राजपाल चौधरी व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुदेश ठुकराल ने प्रदान किए हैं।

बच्चों के कौशल विकास को केन्द्र में रखते हैं: रामनिवास सोलंकी

मुख्य शिक्षक राम निवास सोलंकी का कहना है कि उन्हें जो भी अनुभव जहाँ से भी ग्रहण करने का मौका मिलता है, उसे लेकर अपने स्कूल की भलाई के लिए उसका प्रयोग करने की कोशिश करते हैं। स्कूल में सभी मिलजुल कर कार्य करते हैं। हर तरह की गतिविधियों के संचालन का मकसद विद्यार्थियों का सीखना होता है। जो भी चीज बच्चों की भलाई के लिए है, उसे लागू करते हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के कौशलों का विकास करने में स्कूल हर प्रयास करता है। निरंतर प्रयासों से अधिकतर बच्चे मंच से घबराते व शर्माते नहीं हैं। वे जब मंच पर आते हैं तो हर संभव उनका उत्साहवर्धन किया जाता है। बच्चे संवेदनशील नागरिक बन पाएँ, यही प्रयास रहता है।

विविध गतिविधियों से सीखते हैं शिक्षक: कमलेश

अध्यापिका कमलेश ने बताया कि वे सात साल से इस स्कूल में सेवाएँ दे रही हैं। स्कूल में विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए सभी तरह की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इनके आयोजन में अध्यापकों को भी सीखने का अवसर मिलता है। निरंतर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया जाता है। स्कूल मुखिया यदि किसी दिन स्कूल में नहीं आते तो बच्चे उन्हें याद करते हैं।

विद्यार्थियों में स्टेज का भय नहीं: योगेश

अध्यापक योगेश कुमार का कहना है कि वे स्कूल में अढ़ाई साल पहले आए थे। स्कूल मुखिया के मार्गदर्शन में सभी शिक्षकों को उनकी रुचि के अनुसार विशेष भूमिकाएँ दी जाती हैं। सभी टीम-भावना के साथ काम करते हैं। स्कूल की सबसे खास बात यह है कि स्कूल के विद्यार्थियों में स्टेज का भय नहीं है। इसके लिए स्कूल निरंतर सक्रिय रहता है।

विशेष उपलब्धियाँ-

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला प्रेम नगर दो बार खंड स्तर पर मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण पुरस्कार जीत चुका है। 26 जनवरी को जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में शिक्षा विभाग की झाँकी में स्कूल का अहम योगदान रहता है। स्कूल की अग्रणी भूमिका के साथ दो बार समारोह में विभाग की झाँकी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी है। समाजसेवी संस्थाओं से सहयोग लेने के मामले में भी स्कूल अग्रणी रहता है। मुख्य शिक्षक के स्वभाव व निमंत्रण से प्रभावित होकर विभिन्न संस्थाएँ समय-समय पर स्कूल में आती हैं और सहयोग करती हैं। रामनिवास सोलंकी ने बताया कि रोटरी क्लब करनाल ने स्कूल में वॉश बेसिन लगवाए। दरी, मिड-डे-मील के लिए बर्तन, स्टेशनरी आदि दी है। 'सुख-दुख दे साथी' संस्था ने बच्चों को ड्रैस, जूते, जुराब व स्टेशनरी दान दी। राजेश्वर स्वंतत्र चैरिटेबल ट्रस्ट ने विद्यालय में दो शौचालय बनवाए और एक वाटर कूलर प्रदान किया। ऐसी कई संस्थाएँ हैं, जिन्होंने समय-समय पर स्कूल को सहयोग किया है।

आगामी योजना-आगामी सत्र में अध्यापक भी अपना लेंगे वर्दी-

मुख्य शिक्षक रामनिवास सोलंकी ने बताया कि स्कूल निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। स्कूल के आस-पास कोई भी बच्चा स्कूल से बाहर न रहे। स्कूल के बाहर दुकानों पर काम करने वाले बच्चों को सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से स्कूल में लाए जाने की भरसक कोशिश की जाएगी। स्कूल की छात्र संख्या में भी वृद्धि होगी। अध्यापकों के ड्रेस कोड को लेकर अध्यापकों में आम सहमति है। अतः आगामी सत्र में कोशिश रहेगी कि

अध्यापक एक तरह की ड्रेस में दिखाई दें। सामाजिक सहयोग को अधिकाधिक करने की निरंतर कोशिश की जाएगी।

स्कूल में विशेष व्यक्तित्वों का आगमन-

स्कूल में अनेक अवसरों पर विभिन्न प्रतिष्ठित व्यक्तियों व अधिकारियों का निरंतर आना होता है। शिक्षा विभाग की उपनिदेशक वंदना गुप्ता, जिला शिक्षा अधिकारी राजपाल चौधरी, कार्यक्रम अधिकारी राम कुमार, डीईईओ सुदेश ठुकराल, रोहताश वर्मा, सदानंद वत्स, डीएसएस दीपक वर्मा, डीएमएस छत्रपाल, एडीसी डॉ. वैशाली शर्मा, निशांत यादव, डीपीसी सपना जैन, विजेन्द्र नरवाल सहित अनेक अधिकारी स्कूल में आ चुके हैं। अधिकारियों ने स्कूल की गतिविधियों व नवाचारी तौर-तरीकों की सराहना भी की है।

स्कूल विकास के केन्द्रीय किरदार-मुख्य शिक्षक का सफरनामा-

दिसंबर 1997 में जिला करनाल के राजकीय प्राथमिक पाठशाला, रत्तक में अध्यापक के रूप में पहली बार कार्यभार ग्रहण किया था। गाँव की आबादी सिक्खों की थी। इसलिए लोगों के साथ संवाद करते हुए पंजाबी सीखी। स्कूल के अपग्रेड होने पर पंजाबी विषय पढ़ाया भी। 2004 में मुख्य शिक्षक के रूप में पदोन्नति प्राप्त करने के बाद राजकीय प्राथमिक पाठशाला जयसिंहपुरा आए। स्कूल में छात्र संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि की और 2014 में स्कूल में 450 के करीब संख्या हो गई थी। इस स्कूल को सौंदर्यीकरण में दो बार खंड स्तर पर मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण का पुरस्कार दिलवाया। गाँव जयसिंहपुरा में पूर्व सैनिक सभा व पंचायत ने कई बार सम्मानित किया। 2014 में प्रेमनगर स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में नई पारी की शुरुआत की। यहाँ पर मुख्य शिक्षक राम निवास सौलंकी को सक्षम योजना में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए उपायुक्त करनाल ने दो बार सम्मानित किया। एफएलएन में अच्छा काम करने के लिए भी एक बार डीसी ने सम्मानित किया। स्काउटिंग में उत्कृष्ट कार्य के लिए महामहिम राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सौलंकी ने राजभवन में सम्मानित किया। वर्ष 2021 के लिए राज्य सरकार द्वारा राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्याना
खंड-इन्द्री, जिला-करनाल, हरियाणा

अध्यापकों और विद्यार्थियों का मजबूत रिश्ताः ललिता

अध्यापिका ललिता ने कहा कि हमारा स्कूल निजी स्कूलों को टक्कर दे रहा है। सरकारी स्कूल के अध्यापकों व विद्यार्थियों के प्रति बनी बनाई मिथ्या धारणाएँ तोड़ने. का काम कर रहे हैं। स्कूल में विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच बहुत मजबूत रिश्ता है। उन्होंने बताया कि एक बार उनकी कमर में दर्द था तो बच्चों ने ऑफर किया कि वे उनका काम करेंगे।

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास की सराहना करते अधिकारीः शिव कुमार

वरिष्ठ शिक्षक शिव कुमार ने बताया कि उनके स्कूल के विद्यार्थियों की वर्दी विशेष आकर्षण का केन्द्र है। सदन के अनुसार विद्यार्थियों को वर्दी में देखकर कोई भी वाह-वाह कह उठता है। स्कूल में निरंतर अधिकारियों का आना होता है। वे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास देखकर सराहना करते हैं।

घर के वातावरण का भी रखते हैं ध्यानः दिव्या

शिक्षिका दिव्या कहती हैं कि उनकी पाठशाला में विद्यार्थियों और अध्यापकों में जुड़ाव है। अध्यापक विद्यार्थियों के विकास व गतिविधियों के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। विद्यार्थी भी अध्यापकों के प्रति सम्मान का भाव रखते हैं। यहाँ पर नेतृत्व के गुणों के विकास पर विशेष बल दिया जता है। यहाँ पर शिक्षण कार्य करते हुए विद्यार्थियों के घरों के वातावरण का संज्ञान लिया जाता है। उनकी समस्याओं के समाधान को लेकर विशेष प्रयास किए जाते हैं।

निरीक्षण से नहीं डरते शिक्षकः तेजवीर

अध्यापक तेजवीर ने बताया कि वे बांसो गेट के स्कूल से स्थानांतरित होकर आए थे। एक बार तो उन्हें यहाँ पर आकर उन्हें बोझ सा लगा, लेकिन अब उन्हें अपना स्कूल बहुत अच्छा लगता है। यहाँ अधिकारियों का निरंतर आना होता है तो अधिकारियों के निरीक्षण का कभी भय नहीं होता। उनके स्कूल में मिड-डे-मील वितरण की व्यवस्था और उससे पहले विद्यार्थियों को हाथ धुलाना आदि विशेष चीजें हैं।

निजी स्कूलों से भी अच्छी व्यवस्थाः अलका

अध्यापिका अलका ने बताया कि पाँच साल पहले वे एडिड स्कूल से यहाँ आई हैं। उन्होंने बताया कि उनके स्कूल में निजी व एडिड स्कूलों से भी अच्छी व्यवस्था है। उन्होंने बताया कि एक बार डेंगू की वजह से वे छुट्टी पर रहीं तो बच्चों ने उन्हें बहुत मिस किया। विद्यार्थियों का स्नेह अध्यापकों को स्कूल में खींचता है।

बेहद प्रतिभाशाली चित्रकार हैं सुरेंद्र मोरवाल

पेंटिंग की दुनिया में बनायी वैश्विक पहचान

सत्यवीर नाहड़िया

यदि किसी कलाकार को निरंतर संघर्ष की पथ पर चलकर मौलिक पहचान मिलती है, तो उनकी उपलब्धियाँ समाज एवं राष्ट्र के लिए सदा-सदा के लिए प्रेरणापुंज बन जाती हैं। ऐसे ही प्रतिभाशाली अनूठे चित्रकार है सुरेंद्र मोरवाल, जिन्होंने बचपन से ही कदम कदम पर संघर्ष झेला है, किंतु चित्रकारी के प्रति जुनून, कला के प्रति समर्पण तथा सच्ची साधना के बूते पर वे न केवल निरंतर निखरते गए, अपितु अपनी लीक से हटकर रचनाधर्मिता के आधार पर वैश्विक पहचान बनाने में सफल रहे हैं।

रेवाड़ी जिले के गाँव रोझूवास में जेबीटी टीचर के तौर पर सेवारत श्री मोरवाल का जन्म 31 जुलाई, 1974 को रेवाड़ी जिले के गाँव जाटूसाना में पिता श्री शीशपाल तथा माता श्रीमती चमेली देवी के घर बेहद गरीब परिवार में हुआ। उनके अंदर छिपी चित्रकारी तथा सुलेख की प्रतिभा को सबसे पहले उनके कला अध्यापक राजकुमार ने न केवल मंच प्रदान किया, अपितु उनका मार्गदर्शन भी किया। यही कारण है कि अपने छात्र जीवन में उन्होंने सुलेख तथा चित्रकारी की अनेक प्रतियोगिताओं में जिला स्तर पर विजेता रहकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद पेंटिंग में महारत हासिल कर चुके छात्र सुरेंद्र के फाइन आर्ट्स लेने के सपने उस समय धरे रह गए, जब गरीबों के चलते माता-पिता ने उन्हें आगे बढ़ाने की बजाय अपने साथ मजदूरी में लगा लिया, किंतु इस कलाकार ने हार नहीं मानी। मजदूरी के इस कार्य के साथ दूरस्थ शिक्षा भी जारी रखी, फिर अपनी रुचि-अभिरुचि के अनुसार पेंटिंग क्षेत्र को चुना। इस दौरान उसने अपने छोटे भाई को भी पढ़ाया तथा स्वयं भी पढ़ाई की, जिसकी बदौलत जहाँ उनके भाई प्राध्यापक तथा वे स्वयं जेबीटी अध्यापक के तौर पर इस संघर्ष के सही मायने में प्रणेता बने।

शिक्षा विभाग में पदार्पण के बाद उन्होंने अपनी चित्रकारी की इस प्रतिभा को नया फलक देना प्रारंभ कर दिया, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों की चित्रकारी की कार्यशाला आयोजित करना, अपनी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी लगाना तथा पेंटिंग्स की विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेना आदि शामिल रहा। इन गतिविधियों में उनकी प्रतिभा को निरंतर मान-सम्मान मिलता गया तथा देखते ही देखते हुए पहले प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर तथा फिर डिजिटल क्रांति के माध्यम से चित्रकारी के अंतरराष्ट्रीय फलक पर अपनी विशिष्ट मौलिक पहचान बनाने में सफल रहे हैं। अपनी इन तमाम उपलब्धियों का श्रेय वे अपने कलागुरु तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त चित्रकार अश्विनी कुमार पृथ्वी वासी तथा कलाप्रेमी शुभचिंतकों को देते हैं।

संघर्ष में तपने के बाद भी कला के प्रति वही जुनून रखने वाले श्री मोरवाल के खाते में आज अनेक उपलब्धियाँ दर्ज हैं। इनकी कलाकृतियाँ यूएसए दुबई तथा इंडोनेशिया आदि देशों में भी प्रदर्शित हो चुकी हैं। इनकी मोबाइल एडिक्शन नामक एक कलाकृति अमेरिका में व्यूअर्स च्वाइस अवार्ड जीत चुकी है।

कला क्षेत्र में ये अब तक अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के मेडल व अवार्ड जीत चुके हैं। ये अब तक 6अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मैडल, 142 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रमाण पत्र, 24 पदक और 21 अवार्ड जीत चुके हैं।

अब तक दो बार गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा चुके हैं तथा हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी वर्ल्ड रिकॉर्ड, मार्वल्स बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, इंडिया रिकॉर्ड्स और हार्वर्ड वर्ल्ड रिकॉर्ड्स सहित सात विश्व-रिकॉर्ड में नाम दर्ज करा चुके हैं। इन्हें अब तक लगभग 135 सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इतना ही नहीं तीन अंतरराष्ट्रीय कलापुस्तकों में इनकी कलाकृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

कोरोना काल के दौरान उनकी पेंटिंग्स डिजिटल माध्यम से पूरे विश्व में सराही गईं। इसी प्रकार उनके द्वारा बनाए गए राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित अनेक साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों तथा कलाकारों की पोर्ट्रेट तथा चित्र बेहद चर्चित रहे हैं। उनकी चित्रकारी के प्रमुख विषयों में प्रकृति एवं संस्कृति रही है। सामाजिक विसंगतियों तथा विद्रूपताओं पर भी उन्होंने कलात्मकता के साथ कूँची चलाई है। उनकी पेंटिंग प्रदर्शनी में सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं पर केंद्रित उनकी मुँह बोलती चित्रकारी देखकर दर्शक दाँतों तले उंगली दबाने पर विवश हो जाते हैं। उनकी बहुआयामी चित्रकला के विभिन्न प्रारूपों को देखकर कहा जा सकता है कि वे अपनी कलात्मक में कल्पनाशीलता भरकर कैनवास पर अपने विचारों को रंगों तथा कूँची से बेहद प्रेरक अंदाज़ में प्रस्तुत करने की महारत हासिल कर चुके हैं। उनकी पेंटिंग में देहाती लोक जीवन तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि के जीवंत प्रारूपों को सहज ही देखा जा सकता है।

बेहद विनम्र, हँसमुख तथा मिलनसार श्री मोरवाल अब कार्यशाला लगाकर प्रतिभाशाली बच्चों को पेंटिंग की बारीकियाँ सिखाने तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी अपनी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी लगाने का नया रोड मैप बना रहे हैं, ताकि समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में कल के योगदान को समझा जा सके।

प्राचार्य
रावमावि सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

मेधाविनी छात्रा पल्लवी

साधन सभी जुट जाएँगे, संकल्प का धन चाहिए।
कुछ कर गुजरने के लिए, मौसम नहीं मन चाहिए।

संकल्प के इसी बहुमूल्य धन के साथ राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कोट, पंचकूला की मेधाविनी छात्रा पल्लवी राघव अपने हौसलों को उड़ान देने के लिए प्रतिबद्ध है। विषय चाहे कोई भी हो, शिक्षकों के दिशा-निर्देश को शब्दशः हृदयंगम करके उस पर अपना विमर्श प्रस्तुत करने का आत्मविश्वास इस बालिका में कूट-कूट कर भरा है। यही विशेषता इसे कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से विशिष्ट बना देती है। सातवीं कक्षा में पढ़ रही इस छात्रा का बौद्धिक स्तर विद्यालय के वरिष्ठ छात्रों को भी चकित कर देता है।

बरवाला ब्लॉक के कनौली गाँव की निवासी पल्लवी के पिता श्री हरीश कुमार इलेक्ट्रॉनिक कंपनी में कार्यरत हैं। माता श्रीमती सरला देवी गृहिणी का दायित्व निभाते हुए अपने दोनों बच्चों को पढ़ाई के लिए निरंतर प्रोत्साहित करती हैं। परिवार और विद्यालय में मिल रहे सकारात्मक वातावरण तथा अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के बल पर इस छात्रा ने हाल ही में शिक्षा-विभाग द्वारा हिन्दी-दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबन्ध-लेखन-प्रतियोगिता में विद्यालय और ब्लॉक स्तर पर अन्य प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ने के बाद ज़िलास्तरीय प्रतियोगिता में भी पंचकूला में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मंजीत कौर ने पल्लवी की उपलब्धि पर भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे सभी विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय बताया। अपनी सफलता का श्रेय यह छात्रा माता-पिता तथा शिक्षकों को समान रूप से देती है। अपने सहपाठियों को प्रतिस्पर्धा का पाठ पढ़ाने वाली पल्लवी राघव की निगाहें आसमान पर हैं और भविष्य में भारतीय प्रशासनिक सेवा में कैरियर बनाकर देश और समाज की सेवा करना चाहती है। इस होनहार बालिका के स्वर्णिम भविष्य की मंगलकामनाएँ।

डॉ. अनिरुद्ध भट्ट
संस्कृत-शिक्षक
रावमा विद्यालय कोट, पंचकूला

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

» प्रश्न 1. महात्मा गाँधी कांग्रेस के अध्यक्ष कब चुने गये?
» उत्तर- 1924 में
» प्रश्न 2. भूकंप की तीव्रता नापने वाले यंत्र को क्या कहते हैं?
» उत्तर- रिचर स्केल एवं सिस्मोग्राफ
» प्रश्न 3. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट कहाँ पर स्थित है?
» उत्तर- भोपाल
» प्रश्न 4. स्वेज नहर किन सागरों को जोड़ती है?
» उत्तर- भूमध्यसागर को लाल सागर से
» प्रश्न 5. सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है?
» उत्तर- बृहस्पति
» प्रश्न 6. भारत का राष्ट्रीय फूल कौन है?
» उत्तर- कमल
» प्रश्न 7. भारत की सबसे बड़ी बन्दरगाह कहाँ है?
» उत्तर- मुंबई में
» प्रश्न 8. भारत में कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
» उत्तर- वोमेश चंद्र बनर्जी
» प्रश्न 9. दिल्ली के लाल किले का निर्माण किसने करवाया था?
» उत्तर- शाहजहाँ ने
» प्रश्न 10. विश्व में सबसे बड़ा महाद्वीप कौन सा है?
» उत्तर- एशिया
» प्रश्न 11. कोणार्क मंदिर किस भगवान को समर्पित है?
» उत्तर- सूर्य
» प्रश्न 12. दिल्ली में विजय घाट पर किसकी समाधि है?
» उत्तर- लाल बहादुर शास्त्री जी की
» प्रश्न 13. भारत की पहली सवाक फिल्म कौन सी थी?
» उत्तर- आलमआरा
» प्रश्न 14. 'गाँधी' नामक फिल्म में कस्तूरबा गाँधी की भूमिका किसने निभाई थी?
» उत्तर- रोहिणी हट्टंगड़ी ने
» प्रश्न 15. महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम 'महात्मा' किसने कहा था?
» उत्तर- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने

बाल पहेलियाँ

1. प्रार्थना सभा में खड़े हैं बच्चे।
पहले छोटे, फिर बड़े हैं बच्चे।
कद के अनुसार खड़े हैं बच्चे।
किस क्रम में खड़े हैं बच्चे?

2. बस स्टैंड पर खड़ी हैं बस।
पहले बड़ी, फिर छोटी बस।
इस तरह सब खड़ी हैं बस।
किस क्रम में खड़ी हैं बस?

3. समकोणों से मैं बनी।
चार भुजाएँ मिलाए खड़ी।
चारों ओर से बंद पड़ी।
लंबाई-चौड़ाई भी कम न मेरी।

4. मेरे से टकराओगे।
खुद को भूल जाओगे।
गुणा मेरे से करके देखो।
मेरे जैसा बनते देखो।

5. चार भुजाएँ हैं मेरी।
सम्मुख भुजाएँ एक-जैसी मेरी।
समकोणों से मैं घिरी पड़ी।
चारों ओर से बंद पड़ी।

6. तीन आयामों से मेरा नाता।
गणित मुझे खूब भाता।
गेंद से मैं मेल खाता।
लुढक-लुढ़क कर दौड़ा जाता।

1. आरोही क्रम, 2.अवरोही क्रम, 3. वर्ग, चतुर्भुज, 4.जीरो, 5. आयत,चतुर्भुज, 6.गोला

गुरदीप उरलाना
राजकीय प्राथमिक पाठशाला ताराँवाली,
सीवन, कैथल, हरियाणा

ब्लैक बॉक्स क्या होता है ?

प्यारे बच्चो! ब्लैक बॉक्स एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण होता है जिसका उपयोग हवाई जहाजों और अन्य वाहन दुर्घटनाओं के बाद घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह उपकरण विमानों के उड़ान डेटा और कॉकपिट की आवाज़ें रिकॉर्ड करता है, ताकि किसी दुर्घटना के बाद उसके कारणों का पता लगाया जा सके। ब्लैक बॉक्स वास्तव में नारंगी रंग का होता है, ताकि दुर्घटना के बाद इसे आसानी से ढूँढा जा सके।

ब्लैक बॉक्स के दो मुख्य घटक होते हैं: फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर (एफडीआर)और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर(सीवीआर) । एफडीआर विमान के उड़ान से संबंधित डेटा जैसे गति, ऊँचाई, इंजन की स्थिति आदि रिकॉर्ड करता है, जबकि सीवीआर कॉकपिट में पायलटों के बीच होने वाली बातचीत और अन्य ध्वनियों को रिकॉर्ड करता है। इन दोनों के द्वारा रिकॉर्ड की गई जानकारी दुर्घटना के कारणों का विश्लेषण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ब्लैक बॉक्स की उपयोगिता बहुत व्यापक है। यह दुर्घटनाओं के पीछे के तकनीकी और मानवीय कारणों को समझने में मदद करता है, जिससे भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुधारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं। इसके अलावा, ब्लैक-बॉक्स की जानकारी से विमान निर्माण कंपनियों और एविएशन अधिकारियों को सुरक्षा मानकों में सुधार करने में सहायता मिलती है।

इसकी मदद से विमान दुर्घटनाओं की जाँच में तेजी आती है और सटीक जानकारी प्राप्त होती है, जिससे विमानन उद्योग में सुरक्षा बढ़ाने के प्रयासों को बल मिलता है। इस प्रकार, ब्लैक बॉक्स एक अनिवार्य उपकरण है जो विमान सुरक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

सबसे प्यारा रविवार

सात दिनों में सबसे प्यारा, अपना यह रविवार।
हम बच्चों का मनभावन दिन, लगता ज्यों त्यौहार।।

नींद चैन की पूरी होती, सोते हम भरपूर।
पीठ सराहे हमको दिनभर, रखकर बस्ता दूर।।
झटपट उठना आज नहीं है, चाहे दो उपहार।
हम बच्चों का मनभावन दिन, लगता ज्यों त्यौहार।।

होमवर्क अब नहीं गँवारा, जी भर खेलें खेल।
धमा चौकड़ी, सैर सपाटा, मित्रों से हो मेल।।
छुपन-छुपाई खेलें आओ, बनकर जोड़ीदार।
हम बच्चों का मनभावन दिन, लगता ज्यों त्यौहार।।

ताल, नदी में हमें तैरना, बाग-बगीचे सैर।
पंख मिले तो उड़ते जाना, रखें न नीचे पैर।।
अवनि अंबर तक हम देंगे, सपनों को विस्तार।
हम बच्चों का मनभावन दिन, लगता ज्यों त्यौहार।।

सात दिनों में सबसे प्यारा, अपना यह रविवार।
हम बच्चों का मनभावन दिन, लगता ज्यों त्यौहार।।

कन्हैया साहू अमित
शिक्षक- भाटापारा, छत्तीसगढ़

बात समझ की

प्यारे बच्चो! तुम्हें बताऊँ,
बात समझ की आज।
काम सदा तुम ऐसे करना,
हो सभी को तुम पर नाज।

सबके संग तुम मिलकर रहना,
प्यार-प्रीत तुम सबसे रखना।
सदा ईमानदार बनकर रहना,
धोखाधड़ी से दूर ही रहना।

मात-पिता व गुरुजन का,
आदर व सम्मान है करना।
हमको जो भी सीख वे देते,
उनका सदा ही पालन करना।

कर्मपथ को अपनाकर,
तुम अपना फर्ज निभाना।
मन में ईश का ध्यान रहे,
और सदा धैर्य रखना।

छोड़ सभी चिंताओं को,
तुम सदा ही हँसते रहना।
औरों को भी खुश रखकर,
जीवन को सफल बनाना।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी गुरुग्राम
(हरियाणा)

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. पत्ते की छाप बनाना-

किसी पत्ती के आकार व संरचना के बारे में पढ़ते समय बच्चों ने कॉपी में उन पत्तियों के चित्र बनाए। उन्हें बताया गया कि यदि पत्तियों के आकार व संरचना को और अच्छी तरह समझना है तो पत्तियों की छाप कॉपी पर ले लें। विद्यार्थियों ने विभिन्न पत्तियों की छाप लेने में रुचि दिखाई, तो उन्हें बताया गया कि कॉपी में किसी भी पृष्ठ के नीचे वाले पृष्ठ पर एक पीपल या किसी भी वृक्ष की पत्ती रखकर दूसरे पेज से उसे ढक दें। अपने एक हाथ से ऊपर वाले पृष्ठ के थोड़े-थोड़े हिस्से को अच्छी तरह से दबाते हुए ग्रेफाइट पेंसिल को तिरछा करके से उस स्थान पर रगड़ें यानी शेड करें। जैसे-जैसे शेडिंग पूरी होती गई तो पत्ती बहुत अच्छे तरीके से उभर कर ऊपर वाले पेज पर आती रही, जिससे पत्तियों की मुख्य शिरा, शिरा विन्यास व पर्णवृंत साफ-साफ दिखाई देने लगे। अब तो बच्चों ने विभिन्न पौधों के पत्तों की छाप अपनी नोटबुक में बनाई व निचले पृष्ठ पर मूलपत्ती को भी सेलो टेप से चिपका दिया।

2. विभिन्न पत्तों का कंकाल निकलना-

पत्तों के शिरा-विन्यास को और अच्छी तरह से देखने के लिए विद्यार्थियों ने पत्तों को लगभग 2 से 3 सप्ताह तक एक पात्र में बिना किसी रसायनयुक्त साधारण पानी में डुबोकर रखा। वे कुछ अंतराल पर उस पात्र का पानी भी बदलते रहे। पत्तों के तैयार होते ही शिराओं के बीच गल चुके लिग्निन को उन्होंने ब्रश व उंगलियों की मदद से निकाल दिया। तत्पश्चात् प्राप्त हुए पत्तों को पेपर

नैपकिन की मदद से सुखाया। उन्होंने देखा कि अब पत्तों में पर्णवृंत, मुख्य शिरा व शिरा-विन्यास ही बचा है।उसमें कुछ भी हरे रंग का पदार्थ शेष नहीं बचा है। इस प्रकार प्राप्त संरचना को उन्होंने पत्तियों का कंकाल नाम दिया। विद्यार्थियों ने यह गतिविधि अपने घर पर भी करके बहुत से पत्ते जालिका रूपी शिरा व समानांतर शिरा-विन्यास दोनों प्रकार के पत्तों के कंकाल रूप में तैयार किए।

3. इको ब्रिक्स बनाकर पॉलिथीन कचरा प्रबंधन-

इको ब्रिक वेस्ट पॉलिथीन प्रबंधन का एक बहुत ही बेहतरीन उपाय है। इको मित्रम ऐप से वीडियो देख कर विद्यार्थियों ने स्कूल तथा घर में यहाँ-वहाँ फैले हुए बेकार पॉलिथीन को छोटे टुकड़ों में काटकर एक शीतल पेय की प्लास्टिक बोतल में लकड़ी की छड़ी से ठूँस-ठूँस के भर दिए। विद्यार्थी हैरान रह गए कि इतने सारे पॉलिथीन एक बोतल में किस प्रकार आ जाती हैं, यदि यही पॉलिथीन बाहर बिखरे हों तो बहुत दूर-दूर तक दिखाई देते हैं। बहुत से अन्य विद्यार्थियों ने इनसे सीख कर अपने अपने घर में भी इस प्रकार की एक बोतल लगाई। जिसमें वे अपने घर में हुए वेस्ट पॉलीथिन को यहाँ-वहाँ न फेंक कर उस बोतल में डाल देते हैं। इस बोतल को इको ब्रिक कहा जाता है। इन तैयार हुई इको ब्रिक्स से बाद में गमले या कोई छोटी दीवार इत्यादि संरचना तैयार की जायेगी।

4. बीजों के अंकुरण का पारदर्शी दृश्य देखना-

कक्षा-6 के विद्यार्थियों की मनपसंद गतिविधि होती

है बीजों का अंकुरण होते देखना। वे मूलांकुर को भी देखना चाहते हैं, क्योंकि प्रांकुर तो उन्हें बाहर से दिखाई दे जाता है लेकिन मूलांकुर तो मिट्टी के नीचे अंदर होता है। इसके लिए उन्होंने काँच का एक पात्र लिया। उसमें मिट्टी के स्थान पर रुई भरी और काँच के पात्र की दीवार के साथ-साथ कुछ चने के दाने रख दिए ताकि वे बाहर से भी दिखें। काँच के पात्र में रुई को हल्का सा पानी देकर उसे गीला कर दिया। कुल 16 दिन चले इस प्रोजेक्ट में विद्यार्थियों ने रोज़ाना देखते हुए मुख्यतया बीज से मूलांकुर का निकलना और उससे जड़ का बनना देखा। प्रांकुर का बढ़ना व उससे तना पत्ती बननेका भी नज़ारा किया व बहुत खुश हुए। विद्यार्थियों ने अपने आपने घर पर भी यही अंकुरण प्रोजेक्ट लगाया जिसमें उन्होंने चने के अलावा मक्की, मटर, जौं, सेम, आम की गुठली व मूँग के अंकुरण प्रोजेक्ट विद्यालय में लाकर अन्य विद्यार्थियों व अध्यापकों को दिखाये। उत्साहित विद्यार्थियों ने प्रधानाचार्या आरती गर्ग को भी अपना अपना अंकुरण प्रोजेक्ट दिखाया व उनके बहुत विश्वास से उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

5. क्षय रोग (टीबी) जागरूकता पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता-

क्षय रोग (टीबी) पर जागरूकता कार्यक्रम टीबी हारेगा - देश जीतेगा के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन स्वास्थ्य विभाग द्वारा करवाया गया, जिसमें कक्षा 6 से 12 तक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की। विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता पूर्व विशेषज्ञ व्याख्यान एवं डॉक्युमेंट्री मीडिया द्वारा इस रोग के कारण, जाँच-निदान एवं रोकथाम एवं बचाव बारे जानकारी हासिल की। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने रंग कूँची की मदद से

अपने सुझाव पोस्टर में प्रकट किए। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

अच्छा, तो मिलते हैं फिर नए अंक में, कुछ नई विज्ञान गतिविधियों के साथ...

- साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

विज्ञान शृंखला

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' की प्रस्तुत कड़ी में बात करेंगे चाकू की और उसके माध्यम से कुछ फलों व सब्जियों की कटाई की। चाकू जो सब्ज़ी, फल इत्यादि काटने के काम आता है। आप जिस चाकू का उपयोग कर रहे हो यदि वह तीखा न हो तो आप को उससे किसी वस्तु को काटने में बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी। तीखा चाकू जल्दी और आसानी से काटता है, क्योंकि उसकी धार पतली और नुकीली होती है। इस कारण वह छोटे क्षेत्रफल पर अधिक दबाव डालता है, जिससे सामग्री जल्दी व आसानी से कट जाती है। इसके विपरीत यदि चाकू की धार कुंद होगी तो काटने के लिए अधिक बल लगाना पड़ता है और काटने की प्रक्रिया भी धीमी और मुश्किल हो जाती है। कुंद चाकू में सामग्री को काटने की बजाय उसे दबाने या फाड़ने की प्रवृत्ति होती है, जिससे न केवल काटने में समय अधिक लगता है, बल्कि कटाई भी अच्छी नहीं होती।

मेरी बड़ी बेटी हर काम मौज-मस्ती में करती है। वह खेलते-खेलते खाना खाती है जिससे खाना ठंडा हो जाता है, पर इसकी उसे कोई चिंता नहीं होती। हर काम लटका-लटका कर, धीरे-धीरे अपनी मस्ती में करती है। अगर कोई फल काट कर दो, तो उसे भी देरी से खाती है। एक दिन सेब काट कर दिया तो अपनी आदत के मुताबिक उसने काफी देर तक नहीं खाया। उसकी इसी मस्ती में कटे सेब का रंग भूरा हो गया। छोटी बिटिया उसे कहती रही- दीदी! अब तो खा ले, फल ने भी मुँह बना लिया है।

कटे हुए फल और सब्जियाँ थोड़ी देर में भूरे रंग की हो जाती हैं, क्योंकि उनमें ऑक्सीजन के संपर्क में आने पर एक रासायनिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है, जिसे ऑक्सीडेशन कहा जाता है। जब आप फल या सब्जी काटते हैं, तो उनकी कोशिकाएँ टूट जाती हैं, और इसके परिणामस्वरूप कुछ एंजाइम्स जैसे कि पॉलीफेनॉल ऑक्सीडेज़ (polyphenol oxidase) बाहर निकलते हैं। ये एंजाइम्स ऑक्सीजन के संपर्क में आकर फलों और सब्जियों में मौजूद प्राकृतिक यौगिकों (फेनॉल्स) के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, जिससे ब्राउन पिगमेंट्स (मेलानिन) बनते हैं। यही ब्राउन पिगमेंट्स कटे हुए हिस्से को भूरे रंग का बना देते हैं। यह प्रक्रिया खासकर सेब, आलू आदि में अधिक देखी जाती है। कुछ फलों और सब्जियों में यह प्रक्रिया धीमी होती है और वे तुरंत भूरे नहीं होते। ऑक्सीडेशन को रोकने या धीमा करने के लिए आप निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं-

1. **नींबू का रस लगानाः** नींबू के रस में एसिड होता है, जो एंजाइम की गतिविधि को धीमा करता है और भूरेपन को रोकता है।
2. **ठंडे पानी में रखनाः** कटे हुए फल या सब्जियों को ठंडे पानी में रखने से ऑक्सीजन का संपर्क कम हो जाता है और ऑक्सीडेशन की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।
3. **प्लास्टिक रैप का उपयोगः** कटे हुए हिस्सों को प्लास्टिक रैप से कवर करके ऑक्सीजन के संपर्क से बचाया जा सकता है।

प्याज को काटते समय आँखों से आँसू आने का मुख्य कारण प्याज में मौजूद सल्फरयुक्त यौगिक होते हैं। जब प्याज को काटा जाता है, तो इसमें मौजूद कोशिकाओं के टूटने से एक एंजाइम निकलता है जो सल्फर यौगिकों को रासायनिक प्रतिक्रिया के माध्यम से सल्फेनिक एसिड में बदल देता है। यह सल्फेनिक एसिड तुरंत एक अस्थिर गैस में परिवर्तित हो जाता है जिसे प्रोपेनथियल-एस-ऑक्साइड कहा जाता है। यह गैस हवा में फैल जाती है और जब आँखों के संपर्क में आती है तो यह आँखों की सतह पर मौजूद पानी के साथ मिलकर हल्का सल्फ्यूरिक एसिड बना देती है। इस एसिड की वजह से आँखों में जलन होती है और इसे हटाने के लिए आँखें आँसू बनाकर प्रतिक्रिया करती हैं। यही कारण है कि प्याज काटते समय आँखों से आँसू आते हैं।

प्याज काटते समय आँसू न निकलने के लिए आप कुछ सरल उपाय अपना सकते हैं। प्याज को काटने से पहले उसे 10-15 मिनट के लिए फ्रिज में रख दें। ठंडक की वजह से सल्फर यौगिक कम मात्रा में निकलते हैं, जिससे आँखों में जलन कम होती है। तेज चाकू का उपयोग करें। तेज चाकू से प्याज काटने पर प्याज की कोशिकाएँ कम टूटती हैं, जिससे कम मात्रा में रसायन निकलते हैं। प्याज को पानी के नीचे या पास में रखे पानी के कटोरे में काटें। पानी गैस को सोख लेता है और गैस आपकी आँखों तक नहीं पहुँच पाती। प्याज काटते समय रसोई में पंखा चलायें या वेंटिलेशन सुनिश्चित करें ताकि गैस तेजी से फैल जाए और आँखों तक न पहुँचे। इन उपायों का पालन करने से आप प्याज काटते समय होने वाली जलन और आँसू से बच सकते हैं।

- सुनील अरोरा
पीजीटी
राजकीय सार्थक विद्यालय सैक्टर-12ए, पंचकूला

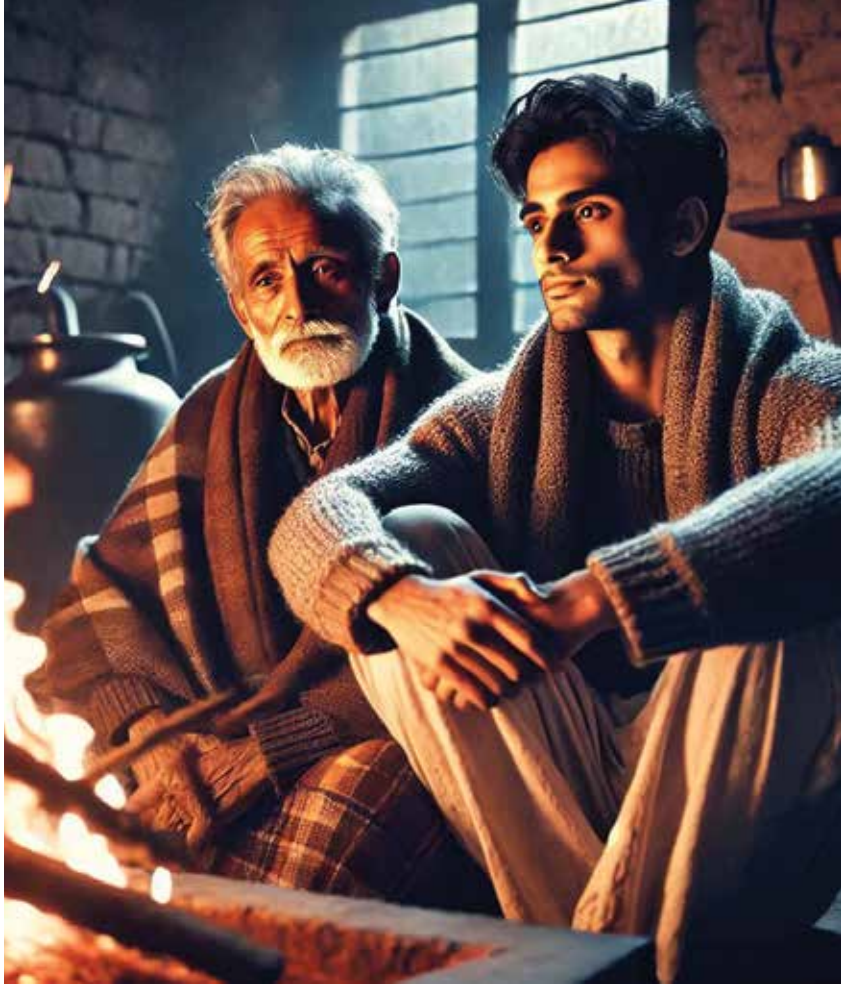

समाज की ताकत

एक आदमी था, जो हमेशा अपने समाज में सक्रिय रहता था। उसको सभी जानते थे, बड़ा मान-सम्मान मिलता था। अचानक किसी कारणवश वह निष्क्रिय रहने लगा। उसने लोगों से मिलना-जुलना बंद कर दिया और समाज से दूर होता चला गया।

कुछ सप्ताह बाद एक बहुत ही ठंडी रात में उस समाज के मुखिया ने उससे मिलने का फैसला किया। मुखिया उस आदमी के घर गया और पाया कि आदमी घर पर अकेला ही था। जलती हुई लकड़ियों की लौ के सामने बैठा आराम से आग ताप रहा था। उस आदमी ने आगंतुक वयोवृद्ध मुखिया का बड़ी खामोशी से स्वागत किया।

दोनों चुपचाप बैठे रहे। केवल आग की लपटों को ऊपर तक उठते हुए ही देखते रहे। कुछ देर के बाद मुखिया ने बिना कुछ बोले, उन अंगारों में से एक लकड़ी जिसमें लौ उठ रही थी, उसे उठाकर किनारे पर रख दिया और फिर से शांत बैठ गया।

मेजबान हर चीज़ पर ध्यान दे रहा था।लंबे समय से अकेला होने के कारण मन ही मन आनंदित भी हो रहा था कि वह आज अपने समाज के मुखिया के साथ है। लेकिन उसने देखा कि अलग की हुए लकड़ी की आग की लौ धीरे-धीरे कम हो रही है। कुछ देर में आग बिल्कुल बुझ गई। उसमें कोई ताप नहीं बचा। उस लकड़ी से आग की चमक जल्द ही बाहर निकल गई।

कुछ समय पूर्व जो उस लकड़ी में उज्ज्वल प्रकाश था और आग की तपन थी, वह अब एक काले और मृत टुकड़े से ज्यादा कुछ शेष न था।

इस बीच दोनों ने बहुत कम बात की, कम से कम शब्द बोले। कुछ देर बाद मुखिया ने जाने की बात कही। जाने से पहले उसने अलग की हुई बेकार लकड़ी को उठाया और फिर से आग के बीच में रख दिया। वह लकड़ी फिर से सुलगकर लौ बनकर जलने लगी और चारों ओर रोशनी और ताप बिखेरने लगी।

जब आदमी, मुखिया को छोड़ने के लिए दरवाज़े तक पहुँचा तो उसने मुखिया से कहा- मेरे घर आकर मुलाकात करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज आपने बिना कुछ बात किए ही एक सुंदर पाठ पढ़ाया है। मैं जान गया हूँ कि अकेले व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता, समाज का साथ मिलने पर ही वह चमकता है और रोशनी बिखेरता है। समाज से अलग होते ही वह लकड़ी की भाँति बुझ जाता है। समाज से ही हमारी पहचान बनती है। इसलिए समाज हमारे लिए सर्वोपरि होना चाहिए।

-अज्ञात

2024

अक्टूबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

2 अक्टूबर- महात्मा गांधी जयंती
3 अक टूबर-महाराजा अग्रसेन जयंती
4 अक्टूबर- विश्वमुस्कान दिवस
11 अक्टूबर- अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
12अक्टूबर- दशहरा
16 अक्टूबर- विश्व खाद्य दिवस
17 अक्तूबर- महर्षि वाल्मीकि जयंती
20 अक्तूबर- करवा चौथ
30 अक्टूबर- विश्व बचत दिवस
31 अक्टूबर- दीपावली

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The 9 days of Navratri and their Significance

Navratri is a significant Hindu festival dedicated to the worship of Goddess Durga, celebrated with great reverence across India and many parts of the world. The festival spans nine nights (hence the name "Navratri," meaning "nine nights" in Sanskrit) and is celebrated in various forms across different regions. Each day of Navratri is dedicated to a different manifestation of Goddess Durga and carries its own unique spiritual and cultural significance.

This comprehensive essay, will explore the nine days of Navratri in detail, the associated goddesses, rituals, and their spiritual meaning, while touching on the cultural importance of the festival across different parts of India.

Overview of Navratri

Navratri typically occurs four times a year, with the most prominent celebrations being:

1. Sharad Navratri (September–October), during the autumn season.
2. Chaitra Navratri (March–April), during the spring season.

Of these, Sharad Navratri is the most widely celebrated, and it concludes with Dussehra (also known as Vijayadashami), which symbolizes the triumph of good over evil. It commemorates Lord Rama's victory over the demon king Ravana, and Goddess Durga's triumph over the buffalo demon Mahishasura.

While the overarching theme of Navratri is the celebration of feminine divine power (Shakti), each of the nine days focuses on one of Durga's different forms. These forms symbolize various aspects of life, like strength, wisdom, power, compassion, and love. Devotees engage in fasting, singing devotional songs, dancing (such as Garba and Dandiya), and performing rituals to honor these goddesses.

The Nine Days of Navratri and Their Significance

1. Day 1: Shailaputri (The Daughter of the Mountain)

The first day of Navratri is dedicated to Shailaputri, which means "daughter of the mountains." She is believed to be an incarnation of Goddess Parvati, the consort of Lord Shiva. In this form, she represents strength, purity, and devotion.

- **Significance :** Shailaputri signifies the beginning of spiritual awakening. She symbolizes nature and is closely associated with the earth. As the daughter of the Himalayas (the abode of Lord Shiva), she represents the grounding energy that helps one start their spiritual journey.
- **Rituals:** Devotees offer red flowers, recite her mantras, and seek blessings for a fresh beginning. It is believed that worshipping Shailaputri brings stability and strength to overcome

life's challenges.

2. Day 2: Brahmacharini (The Ascetic Goddess)

On the second day, devotees worship Brahmacharini, the goddess who practiced severe penance (tapasya) to win the love of Lord Shiva. She is depicted holding a rudraksha mala and a kamandal (water pot), symbolizing her ascetic life.

- **Significance:** Brahmacharini represents sacrifice, determination, and discipline. Her story teaches devotees the importance of penance, self-restraint, and devotion on the spiritual path. She inspires perseverance in the face of hardship.
- **Rituals:** Flowers, sweets, and fruits are offered to the goddess. Devotees often chant hymns and meditate on her qualities, seeking inner peace and fortitude to navigate life's trials.

3. Day 3: Chandraghanta (The Warrior Goddess)

The third day of Navratri is dedicated to Chandraghanta, the fierce warrior form of Durga. She is depicted with a crescent moon on her forehead and rides a lion, symbolizing courage and fearlessness. She is ready to destroy evil and protect her devotees.

- **Significance:** Chandraghanta embodies strength, grace, and bravery. Her form signifies the power to fight injustice and evil. She is the goddess who responds to her devotees' cries for help, assuring them of her divine protection.
- **Rituals:** Devotees pray for strength and protection from evil forces, both external and internal. The color associated with this day is white, symbolizing peace and purity, even in the face of conflict.

4. Day 4: Kushmanda (The Creator of the Universe)

The fourth day is dedicated to Kushmanda, which means "the cosmic egg." It is believed that she created the

universe with her divine smile and radiance. She is depicted as a goddess with eight hands holding various weapons and symbols.

- **Significance:** Kushmanda represents the creative energy of the universe, and worshipping her enhances vitality, health, and wealth. She also symbolizes the illumination of the mind and the world, dispelling darkness and ignorance.
- **Rituals:** Devotees offer pumpkins, flowers, and light lamps in her honor. She is revered for her power to grant strength and creativity, making her particularly beloved by artists and professionals who rely on innovation and creativity.

5. Day 5: Skandamata (Mother of Kartikeya)

On the fifth day, devotees honor Skandamata, the mother of Lord Kartikeya (also known as Skanda or Murugan), the commander of the divine army. She is depicted holding her son on her lap and riding a lion, symbolizing the nurturing yet protective nature of motherhood.

- **Significance:** Skandamata represents maternal love, care, and devotion. She signifies the power of nurturing and compassion, showing that strength is not only in battle but also in the tender protection of life.
- **Rituals:** Yellow is the color associated with this day, symbolizing warmth and positivity. Devotees pray for blessings related to family, health, and well-being. Skandamata is also believed to grant wisdom and success.

6. Day 6: Katyayani (The Warrior Goddess Born to Sage Katyayana)

The sixth day is dedicated to Katyayani, a fierce form of Durga, born to the sage Katyayana to destroy the demon Mahishasura. She is depicted with four arms, riding a lion, and is associated with courage and victory over evil.

- **Significance:** Katyayani represents the ultimate victory of good over evil, justice over injustice. She symbolizes courage, strength, and righteousness. Worshipping her helps in removing obstacles and is

believed to grant success in both worldly and spiritual pursuits.

- **Rituals:** People pray for her blessings in removing fear and obstacles, particularly for young girls seeking a righteous life partner. Red or orange are the associated colors of the day, representing energy and valor.

7. Day 7: Kalaratri (The Dark Goddess)

The seventh day is devoted to Kalaratri, the most fearsome form of Durga. Her dark complexion, disheveled hair, and fierce countenance symbolize the destruction of ignorance and evil. She is the goddess who eliminates all negativity and ushers in light.

- **Significance:** Kalaratri represents the power of time and death. Her terrifying appearance symbolizes the power to destroy fear and darkness, both literal and metaphorical. Despite her fierce form, she is considered benevolent to her devotees, protecting them from harm.
- **Rituals:** People often worship her with great reverence, offering red flowers and lighting lamps to symbolize the triumph of light over darkness. The color of the day is black, signifying the absorption of all negative energy.

8. Day 8: Mahagauri (The Goddess of Purity)

The eighth day, Ashtami, is dedicated to Mahagauri, the goddess of purity, wisdom, and peace. She is depicted in a radiant white form, symbolizing her pure and tranquil nature. It is believed that after her penance as Brahmacharini, she bathed in the holy waters of the Ganges and emerged as Mahagauri.

- **Significance:** Mahagauri signifies inner transformation, purity, and peace. Her worship is said to remove all past sins and purify the soul, allowing for spiritual progress. She is also associated with the fulfillment of desires and prosperity.
- **Rituals:** Many devotees observe fasts on this day, especially young girls, seeking blessings for a virtuous life. White is the color of the day, representing peace and serenity.

9. Day 9: Siddhidatri (The Giver of Supernatural Powers)

The ninth day, Navami, is dedicated to Siddhidatri, the goddess who grants siddhis (supernatural powers) and fulfills the spiritual and worldly desires of her devotees. She is depicted sitting on a lotus and is surrounded by gods who worship her for blessings.

- **Significance:** Siddhidatri symbolizes the culmination of spiritual practices. She is worshipped as the ultimate source of all spiritual and mystical powers, granting wisdom, enlightenment, and the ability to transcend the limitations of the material world.
- **Rituals:** People seek her blessings for spiritual and material prosperity. The color of the day is purple, symbolizing aspiration and ambition. Navami celebrations often conclude with grand prayers, offerings, and rituals, marking the end of Navratri.

Cultural Variations of Navratri

Although the core theme of Navratri is the same throughout India, the way it is celebrated varies across different regions.

1. In Gujarat, Navratri is marked by the famous Garba and Dandiya dances. People dress in traditional attire and dance in large groups around a central statue of the goddess. It's a lively celebration that emphasizes community bonding and joy.
2. In West Bengal, the last four days of Navratri (Maha Saptami, Maha

Ashtami, Maha Navami, and Vijayadashami) are celebrated as Durga Puja, one of the biggest festivals in the state. Elaborate idols of Durga are made, and there are grand processions and cultural performances.

3. In Maharashtra, Navratri is celebrated with a focus on prayers, fasting, and devotion. People often invite others to their homes to partake in meals and rituals. Special significance is given to the Dussehra day, where effigies of Ravana are burned.
4. In South India, Navratri is celebrated with the Golu festival, where dolls and figurines of gods, goddesses, and scenes from mythology are arranged on tiered steps. Women and children sing songs and offer prayers at these displays, emphasizing learning and creativity.
5. In Northern India, particularly in states like Uttar Pradesh and Bihar, Ramlila performances depicting the life of Lord Rama are held in open-air theatres. Dussehra marks the culmination of these performances, symbolizing the victory of Rama over Ravana.

Conclusion

Navratri is a festival that encapsulates the essence of feminine divinity, strength, compassion, and spiritual awakening. Each day brings forth a different aspect of Goddess Durga, guiding devotees toward spiritual progress and worldly success. It is not just a time for rituals and fasting but also for introspection, self-discipline, and celebration of the cosmic balance between creation and destruction. Whether celebrated through dance, prayers, or cultural festivities, Navratri continues to be a vibrant expression of devotion and joy in the Indian spiritual and cultural landscape.

A Delightful Journey of 16 Years

A hundred professions to choose from, fate led me to one,
Teaching, the noblest, where dreams are won,
The Almighty's blessing, a gift so true ,
From where all high profiles of the country grew.

Honored with a list of institutions, I got a perfect seat,
Priyadarshini GCW...the center of excellence as the sweet treat,
Destiny and hardwork landed me at the nearest,
Met a lot of people, rendevous to be closest.

Lush with petals bright, splendid and wide,
Every season seems like Elysian here,
Whenever I enter, I bow eternally,
Realm of breathtaking beauty, literally.

Potion of Knowledge, I take everyday though,
It's my energy booster when I feel low.
My job is the rollercoaster of emotions blue,
Each day, I'm learning something new.

The situations are sometimes challenging,
Always Strengthens and improves me although.
The confidence, the reliance, my students reflecting,
Raises my HB level & balances my vitamins too.

The love and respect works like tonic,
As much as I get, I double its flow,
The universe accelerates the speed of my aim,
That makes my dazzling moments glow.

Yet days go by, and years rush on,
Devotion, affection, love grows and all grown,
You are the cause of my euphoria, all the way through,
I felt on joining and I promise it'll be on retirement too.

Thank you, Lord, for this delightful journey and the blessings you have bestowed on my life.

Dr. Himanshu Garg
Asstt. Professor,
Deptt. of Comp. Science,
Govt. College for Women, Jind

International day of the Girl Child

The International Day of the Girl Child is an annual observance that takes place on October 11, and it was established by the United Nations to recognize the challenges faced by girls around the world and to promote their empowerment. The day serves as a powerful platform to advocate for the rights of girls, highlight gender inequalities, and raise awareness about issues such as access to education, healthcare, protection from violence, and opportunities for leadership.

Historical Background

The International Day of the Girl Child was first celebrated in 2012, following a United Nations General Assembly resolution passed on December 19, 2011. The idea for the day was spearheaded by Plan International, a non-governmental organization that works globally for children's rights. As part of their "Because I Am a Girl" campaign, Plan International sought to draw attention to the discrimination and inequalities faced by girls, particularly in developing countries, and to advocate for change.

The day was officially adopted by the UN to focus attention on addressing the unique challenges girls face and to promote girls' empowerment and the fulfillment of their human rights. It is part of broader efforts to achieve gender equality, as outlined in Goal 5 of the Sustainable Development Goals (SDGs), which aims to "achieve gender equality and empower all women and girls" by 2030.

Theme of the Day

Each year, the International Day of the Girl Child adopts a specific theme to focus global attention on a pressing issue affecting girls. The theme provides a framework for organizing events, launching campaigns, and mobilizing resources. Over the years, themes have covered a wide range of critical issues, including:

- 2013: "Innovating for Girls' Education"
- 2016: "Girls' Progress = Goals' Progress: What Counts for Girls"
- 2021: "Digital Generation, Our Generation"
- 2022: "Our Time is Now—Our Rights, Our Future"
- 2023: "Invest in Girls' Rights: Our Leadership, Our Well-being"

These themes highlight different dimensions of the challenges faced by girls and create momentum for addressing them on a global scale. They serve as a rallying point for activists, governments, organizations, and civil society groups to work together in driving positive change for girls.

Challenges Faced by Girls Globally

Despite progress in some areas, girls around the world continue to face significant challenges that prevent them from realizing their full potential. These challenges can vary based on geographical, cultural, and socio-economic contexts, but some of the

most pervasive issues include:

1. Access to Education

One of the most significant issues for girls, especially in developing countries, is access to education. According to UNICEF, more than 129 million girls around the world are out of school, including 32 million girls of primary school age and 97 million of secondary school age. Girls are often denied education due to poverty, cultural norms, early marriage, child labor, or gender-based violence.

The lack of access to education has far-reaching consequences for girls and their communities. Educated girls are more likely to escape the cycle of poverty, delay marriage, and have fewer and healthier children. They also contribute to the workforce and national economic growth. However, barriers such as lack of safe transportation, inadequate sanitation facilities, and societal attitudes toward girls' education still exist in many places.

2. Child Marriage and Early Pregnancy

Child marriage remains a widespread practice, particularly in parts of Africa, South Asia, and the Middle East. UNICEF estimates that 12 million girls are married before the age of 18 every year, with some as young as 10 or 11. Child marriage robs girls of their childhood, cuts short their education, and increases their risk of domestic violence and health complications from early pregnancies.

Early pregnancies pose serious health risks for young girls. Complications from pregnancy and childbirth are the leading cause of death for girls aged 15-19 globally. Moreover, girls who become mothers at a young age are often forced to drop out of school, limiting their opportunities for the future.

3. Gender-Based Violence

Girls are disproportionately affected by gender-based violence, which can take many forms, including physical violence, sexual abuse, trafficking, and harmful practices like female genital mutilation (FGM). The World Health Organization (WHO) reports that around 1 in 3 women worldwide experience physical or sexual violence in their lifetime, with girls and young women being particularly vulnerable.

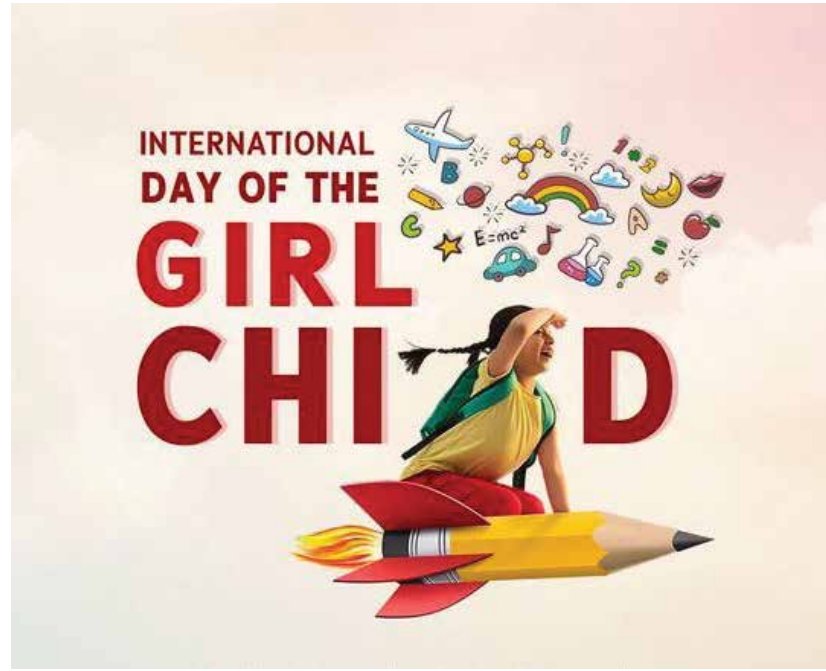

In conflict zones, girls are at an even higher risk of violence and exploitation. They may be abducted, forced into marriage, or trafficked as child soldiers. In humanitarian settings, the breakdown of social systems often leaves girls without protection, making them easy targets for exploitation.

4. Health and Nutrition

Girls in low-income countries often suffer from poor health and malnutrition, exacerbated by gender inequalities in access to healthcare. Malnutrition can stunt physical and cognitive development, affecting girls' ability to learn and thrive. Additionally, girls often face limited access to sexual and reproductive health services, leaving them at risk of unintended pregnancies, sexually transmitted infections (STIs), and maternal health complications.

In many cultures, the needs of boys are prioritized over girls, particularly when it comes to food and healthcare, leading to higher rates of illness and mortality among girls. Ensuring access to health services, including education on menstrual hygiene, is essential for the well-being of girls.

Empowerment and the Role of Education

One of the key ways to overcome the challenges girls face is through empowerment. Empowerment is about providing girls with the tools, resources, and opportunities to realize their potential and make choices about their futures. Education plays a pivotal role in this process.

When girls are educated, they are better equipped to break the cycle of poverty, improve their health, and contribute to their communities. Girls' education is one of the most effective investments for addressing global poverty, improving economic growth, and promoting gender equality. Moreover, educated girls tend to marry later and are more likely to send their

own children to school, creating a positive cycle of empowerment.

The Role of Technology and Innovation

In the digital age, access to technology and innovation is crucial for girls' empowerment. The theme for the 2021 International Day of the Girl Child was "Digital Generation, Our Generation," reflecting the importance of ensuring that girls are not left behind in the digital revolution.

Access to the internet, technology, and digital literacy can provide girls with new opportunities for learning, entrepreneurship, and leadership. However, a significant digital gender divide persists. According to UN Women, globally, women and girls are 25% less likely than men and boys to be able to access the internet. Closing this gap is crucial for achieving gender equality and ensuring that girls can benefit from the opportunities of the digital age.

Global Efforts and Initiatives

Over the years, several global initiatives and partnerships have emerged to address the challenges girls face and promote their empowerment. Some of the notable initiatives include:

- UNICEF's Girls' Education Initiative: Focuses on improving access to quality education for girls, especially those living in disadvantaged areas.
- Plan International's "Because I Am a Girl" Campaign: Advocates for girls' rights and gender equality and works to end child marriage, promote girls' education, and empower girls to become leaders.
- The Malala Fund: Founded by Malala Yousafzai, a Pakistani education activist and Nobel laureate, the Malala Fund works to ensure that every girl has access to 12 years of free, quality education.

Governments, NGOs, and private sector organizations have also been involved in various projects aimed at improving access to education, healthcare, and technology for girls, as well as advocating for policies that promote gender equality and protect girls from violence and discrimination.

Conclusion

The International Day of the Girl Child is more than just a day of observance; it is a call to action for communities, governments, and organizations to work together to address the issues that girls face globally. It serves as a reminder of the importance of investing in girls' rights, ensuring their access to education and health services, and protecting them from violence and discrimination.

Empowering girls is not only a matter of fairness but also a necessity for achieving broader global development goals. When girls are given the tools to succeed, they contribute to their families, communities, and societies, driving positive change and creating a more just and equal world for all.

October in India

October marks a significant shift in the seasonal cycle of the subcontinent. It is a time of transition, where the oppressive heat of summer and the monsoon's heavy rains recede, giving way to the calm and pleasant post-monsoon or autumn period. This month carries immense cultural, agricultural, and environmental importance, influencing everything from festivals and harvests to climate patterns. As the land dries up after the rains, festivities and agricultural activities spring into action, making October one of the most dynamic months in India's calendar.

The Seasonal Transition in October

India experiences four main seasons: summer, monsoon, post-monsoon (autumn), and winter. October marks the beginning of the post-monsoon season, where the retreating monsoon winds and cooler temperatures bring relief from the humid and wet conditions of the previous months.

The Retreating Monsoon

October in India is largely defined by the retreat of the Southwest Monsoon, which had previously blanketed the country in heavy rains from June to September. The retreat of the monsoon is not uniform across the country but occurs progressively from north to south. By early October, the northern and central parts of India typically experience clear skies and drying conditions, while southern India may still experience scattered rainfall as the monsoon retreats.

This shift in weather patterns brings significant changes:

- **Temperature:** The heat of summer starts to recede, especially in northern India. Daytime temperatures can still be warm, especially in places like Rajasthan and Gujarat, but the nights become noticeably cooler. In the southern states, the temperature remains relatively consistent, although it becomes less humid.
- **Humidity:** October sees a substantial drop in humidity levels, especially in the northern and western parts of the country, which had experienced high levels of moisture during the monsoon. The air becomes drier, creating a more comfortable climate.
- **Wind Patterns:** The Southwest Monsoon winds withdraw, and dry, cooler winds from the north begin to influence the northern plains, contributing to a gradual transition toward winter in November and December.

Regional Climate Variations

India's vast geographical diversity means that different regions experience distinct climatic conditions in October.

1. **Northern India:** In the northern plains (including states like Punjab, Haryana, Uttar Pradesh, and Delhi), October brings a pleasant respite from the scorching summer heat and the torrential monsoon rains. The skies clear and temperatures cool down, particularly in the evenings and early mornings. However, some parts of northwestern India, like Rajasthan, may still experience relatively hot daytime temperatures.

In the Himalayan regions, particularly in Kashmir, Himachal Pradesh, and Uttarakhand, October marks the beginning of autumn, with cooler temperatures and the first signs of winter approaching in the higher altitudes. The leaves start changing color, creating stunning landscapes. In these regions, snow may begin to fall in the higher reaches by the end of the month.

2. **Western India:** In states like Maharashtra and Gujarat, October is the month when the monsoon finally recedes, leaving behind a refreshed landscape. The weather becomes dry, and the humidity

levels drop, making the air feel cooler and more pleasant. Mumbai, which experiences heavy monsoon rains, starts drying up, and the pleasant post-monsoon weather sets in, making it a favorable time for tourists and residents alike.

3. **Eastern India:** In West Bengal, Odisha, and Bihar, October is a month of celebration, as the monsoon gives way to clear skies just in time for Durga Puja, one of the most important festivals in this region. The weather in eastern India remains warm, but the oppressive humidity of the monsoon recedes, providing a more comfortable climate for outdoor celebrations.
4. **Southern India:** While most of the country experiences the retreat of the Southwest Monsoon, southern India, particularly Tamil Nadu and parts of Kerala, starts to receive rainfall from the Northeast Monsoon in late October. This phenomenon is often referred to as the "retreating monsoon" or Thulavarsham in Kerala. The Northeast Monsoon is critical for agricultural activities in these regions, providing much-needed rain after the relatively dry summer months.
5. **Central India:** In Madhya Pradesh and Chhattisgarh, October marks the end of the monsoon, and the agricultural cycle moves toward the harvest phase. The weather is comfortable, with clear skies and moderate temperatures. This region experiences mild autumn weather and farmers begin preparing for the Rabi crop planting season, which starts in November.
6. **Northeastern India:** States like Assam, Meghalaya, and Arunachal Pradesh see the monsoon retreat in October, leaving behind lush landscapes and flowing rivers. The weather remains relatively cool, and the region experiences pleasant, mild temperatures, ideal for agriculture and tourism.

Agriculture in October

October is an important month for agriculture in India, as it signals the start of the harvest season for many crops. The Kharif crops, which were sown at the beginning of the monsoon, reach maturity in October, and farmers begin harvesting crops such as rice, maize, and pulses.

- Rice, the staple crop of many parts of India, is harvested during this time, particularly in states like West Bengal, Uttar Pradesh, and Andhra Pradesh. The monsoon rains provide the necessary water for the rice crop, and October's clear skies are ideal for harvesting.
- Sugarcane is another key crop that is harvested in October, especially in Uttar Pradesh and Maharashtra.

At the same time, farmers in northern India begin preparing their fields for the Rabi crop sowing season, which includes crops like wheat, barley, and mustard. The drier conditions and cooler temperatures in October make it an ideal time to begin tilling the soil and planting seeds for the winter crops.

Festivals in October

October is a festive month in India, with several important religious and cultural celebrations taking place.

1. **Durga Puja:** Celebrated with great fervor in West Bengal, Odisha, Assam, and Bihar, Durga Puja marks the victory of Goddess Durga over the buffalo demon Mahishasura. The festival, typically held in early to mid-October, is marked by grand processions, artistic decorations, and community gatherings. In Kolkata, the capital of West Bengal, massive idols of Goddess Durga are crafted and worshipped, with elaborate pandals (temporary structures) set up across the city.
2. **Dussehra:** Also known as Vijayadashami, Dussehra is celebrated across India to mark the victory of Lord Rama over Ravana, symbolizing the triumph of good over evil. In northern India, Ramlila performances (dramatic re-enactments of the Ramayana) culminate in the burning of effigies of Ravana, while in southern India, it is celebrated with grand processions and prayers. In Mysuru, Karnataka, Dussehra is marked by the famous Mysuru Dasara festival, known for its royal elephant processions and cultural performances.
3. **Navratri:** The nine-day festival dedicated to the worship of Goddess Durga is celebrated with much enthusiasm across the country, particularly in Gujarat, Maharashtra, and West Bengal. In Gujarat, Garba and Dandiya dances are performed in large community gatherings, while in Maharashtra, special prayers are held in homes and temples.
4. **Diwali Preparations:** Though Diwali usually falls in late October or early November, the preparations for this festival of lights begin in October. Homes are cleaned and decorated, and markets are filled with lights, sweets, and firecrackers in anticipation of the celebrations.
5. **Gandhi Jayanti:** October 2 is celebrated as Gandhi Jayanti, marking the birth anniversary of Mahatma Gandhi, the leader of India's independence movement. It is a national holiday, and many people observe the day with prayers, cultural events, and acts of charity, in line with Gandhi's philosophy of non-violence and service to humanity.

Environmental Impact of October

The shift in seasons during October also has several environmental implications. As the monsoon retreats, rivers and lakes swell with the runoff from the rains, replenishing water bodies across the country. However, this period also marks the beginning of a dry spell in many parts of India, particularly in the northern and western regions, leading to the need for efficient water management for both agricultural and domestic purposes.

Additionally, the post-monsoon period sees a rise in air pollution in some parts of India, particularly in the northern plains. As farmers prepare their fields for the Rabi crop, the burning of crop residues (stubble burning) becomes common in states like Punjab and Haryana. This practice contributes to high levels of air pollution, particularly in cities like Delhi, where air quality deteriorates in late October and early November.

Conclusion

October in India is a month of contrasts and transitions, marked by the retreat of the monsoon, cooler temperatures, vibrant festivals, and the beginning of the harvest season. It is a time of renewal and celebration, as the land recovers from the monsoon rains and prepares for the onset of winter. The seasonal changes in October influence every aspect of life, from agriculture to culture, making it one of the most significant months in India's annual cycle.

Trekking in Morni Hills

Morni Hills, nestled in the Shivalik range of the Himalayas in Haryana, is a relatively unexplored but stunning hill station, offering lush greenery, serene lakes, and gentle hillocks. Located about 45 kilometers from Chandigarh and 35 kilometers from Panchkula, Morni Hills has gained popularity for its scenic beauty, biodiversity, and opportunities for adventure, particularly trekking.

The Haryana Government, recognizing the region's tourism potential, has been actively promoting trekking and adventure activities in Morni Hills through the Haryana Tourism Department. Several treks of varying difficulty levels are available for both novice and seasoned trekkers. These trails take participants through forested paths, past quaint villages, and along scenic ridges, providing panoramic views of the surrounding hills and valleys.

Overview of Morni Hills

At an altitude of approximately 1,220 meters, Morni Hills is the only hill station in Haryana. It is known for its pleasant climate, making it a popular getaway for people seeking respite from the heat of the plains, particularly during the summer months. The area is rich in flora and fauna, and it's not uncommon to spot leopards, deer, and various bird species along the trekking routes.

The hills are also home to two interconnected lakes, known as Tikkar Tal, which are a major tourist attraction. These lakes are situated in the valley surrounded by high ridges, adding to the scenic charm of the region.

Popular Treks in Morni Hills

Trekking in Morni Hills offers a mix of scenic beauty, adventure, and opportunities to explore local culture. Here are some of the most popular trekking routes in the region:

1. Tikkar Tal Trek

The Tikkar Tal trek is one of the most popular and scenic treks in Morni Hills. The trek takes you through dense forests and picturesque landscapes, leading to the twin lakes of Tikkar Tal—Bada Tikkar (Big Lake) and Chota Tikkar (Small Lake). The lakes are surrounded by rolling hills, creating a perfect backdrop for photography and relaxation.

- Difficulty Level: Easy to moderate
- Distance: Approximately 6-8 kilometers
- Highlights: Stunning views of the lakes, forest trails, bird watching, and picnic spots.

The Haryana Tourism Department has set up a resort and basic amenities near Tikkar Tal, making it a convenient starting or ending point for the trek. The area is also popular for boating and camping.

2. Morni Fort Trek

The Morni Fort trek is a relatively short trek that combines history with natural beauty. The Morni Fort, perched atop a hill, offers a glimpse into the region's past, as well as panoramic views of the surrounding hills and

valleys. The fort itself is a small, historic structure, but the views from the top make the trek worthwhile.

- Difficulty Level: Easy
- Distance: Approximately 3-4 kilometers
- Highlights: Historical fort, panoramic views, gentle trekking paths.

The trail leading to the fort is well-marked and is suitable for families and beginners. The Haryana Government has taken steps to preserve and maintain the fort, and guided tours are available for those interested in learning about its history.

3. Bhoj Jabial Trek

The Bhoj Jabial trek is a bit more challenging than the Tikkar Tal or Morni Fort treks and is ideal for those looking for a longer, more adventurous hike. The trek takes you through thick pine forests, offering an immersive experience of the natural beauty and tranquility of Morni Hills. The trail also passes through local villages, providing an opportunity to interact with the local community and learn about their way of life.

- Difficulty Level: Moderate
- Distance: Approximately 10-12 kilometers
- Highlights: Dense forests, local village life, wildlife sightings, and scenic viewpoints.

The Haryana Tourism Department has been promoting this trek for those who want to experience the more secluded and unspoiled parts of Morni Hills. Trekking guides are available, and arrangements can be made for overnight stays in camps or local guesthouses.

4. Ghaggar River Trek

The Ghaggar River trek is another popular trek in the region, offering stunning views of the Ghaggar River as it winds its way through the hills. The trek is relatively easy and is perfect for nature lovers and birdwatchers.

The river provides a refreshing spot to rest and enjoy the beauty of the surrounding landscape.

- Difficulty Level: Easy to moderate
- Distance: Approximately 7-9 kilometers
- Highlights: River views, birdwatching, and serene natural surroundings.

This trek is particularly beautiful during the post-monsoon season when the river is full, and the landscape is lush and green.

5. Karoh Peak Trek

For those looking for a more challenging trek, the Karoh Peak is the highest point in Morni Hills, standing at around 1,467 meters. The trek to the peak is steep and requires a good level of fitness, but the views from the top are worth the effort. From the summit, you can enjoy panoramic views of the surrounding hills, forests, and even parts of the distant Shivalik Range.

- Difficulty Level: Moderate to difficult
- Distance: Approximately 10 kilometers
- Highlights: Highest peak in the region, challenging terrain, breathtaking views.

This trek is ideal for seasoned trekkers who are looking for a more physically demanding adventure. The Haryana Tourism Department has been working on improving trail signage and offering guided treks to Karoh Peak.

Treks Organized by the Haryana Tourism Department

In recent years, the Haryana Tourism Department has taken several initiatives to promote eco-tourism and adventure tourism in Morni Hills. Recognizing the growing interest in trekking and adventure activities, the department organizes regular trekking expeditions, often in collaboration with local trekking clubs, adventure groups, and environmental organizations.

Here are some of the key activities and treks organized by the Haryana Tourism Department:

1. Eco-Tourism and Nature Treks

The government has launched eco-tourism initiatives to promote sustainable travel and highlight the region's natural beauty. Special nature treks are organized that focus on educating participants about the local ecosystem, biodiversity, and conservation efforts. These treks are usually led by naturalists and guides who provide insights into the flora and fauna of the region.

- Target Audience: Families, nature lovers, and school groups
- Focus: Environmental education and conservation

2. Adventure Treks and Camps

To attract adventure enthusiasts, the Haryana Tourism Department offers adventure treks that include activities like rock climbing, rappelling, and camping. These treks are designed for thrill-seekers and offer a more rugged experience. Campsites are set up along the trekking routes, and participants can enjoy a night under the stars, along with bonfires and outdoor activities.

- Target Audience: Adventure seekers and youth groups
- Focus: Adventure sports and team-building activities

3. Heritage Treks

The heritage treks organized by the tourism department focus on the historical and cultural significance of the region. These treks include visits to the Morni Fort, local temples, and ancient structures scattered around the hills. The treks are guided by experts who share historical anecdotes and cultural information, making it a rich and immersive experience.

- Target Audience: History buffs and cultural tourists
- Focus: Heritage conservation and cultural education

4. Community Treks

In collaboration with local communities, the Haryana Tourism Department organizes community-based treks, where participants get to explore the region while interacting with local villagers. These treks offer a chance to experience the traditional lifestyle of the people living in the hills, including their farming practices, food, and festivals.

- Target Audience: Cultural tourists and eco-tourists
- Focus: Promoting local culture and sustainable tourism

Infrastructure and Support by Haryana Government

To encourage trekking and adventure tourism, the Haryana government has made considerable efforts to improve the infrastructure in Morni Hills:

- Way-marked Trails: Several trekking trails have been marked and signposted to make it easier for trekkers to navigate through the hills.
- Guided Tours: Local guides trained by the Haryana Tourism Department are available for hire, offering valuable insights into the region's history, culture, and biodiversity.
- Eco-Friendly Campsites: Campsites along popular trekking routes are maintained by the tourism department, ensuring a clean and eco-friendly environment for visitors.
- Resorts and Accommodation: The Haryana government operates resorts and guesthouses in Morni Hills, providing comfortable lodging options for trekkers and tourists alike.

Recently the Kanan Dhaman to Thanda/Thatha Village Trek, was conducted by the Haryana Tourism Department on the occasion of World

Tourism Day. It was an exciting initiative aimed at promoting eco-tourism and adventure tourism in the state. The trek offered participants a chance to explore the natural beauty and cultural richness of the Morni Hills region, with a focus on engaging with local communities, enjoying scenic landscapes, and experiencing the serene environment of the Shivalik foothills.

The Significance of the Trek

The Haryana Tourism Department has been actively promoting adventure tourism in the state, particularly in the Morni Hills area, which is known for its lush green valleys, forested hills, and picturesque villages. The Kanan Dhaman to Thanda/Thatha Village Trek was specially organized to celebrate World Tourism Day on September 27th, aligning with the global theme of sustainable tourism and community engagement.

This trek was designed to showcase the lesser-known parts of Haryana's natural heritage and provide a platform for participants to connect with the region's culture, biodiversity, and scenic beauty.

The Trek Route: Kanan Dhaman to Thanda/Thatha Village

The trek starts from Kanan Dhaman, a serene and relatively untouched area in the Morni Hills. The route is carefully curated to pass through diverse landscapes,walkin g through a clouds, from open meadows to forested paths, providing participants with an immersive experience of the local ecology. Along the way, trekkers encounter a variety of plant species, local wildlife, and breathtaking views of the surrounding hills.

- Kanan Dhaman is located amidst dense forests, offering a peaceful starting point for the trek. The early part of the trek involves navigating through forest trails, with the crisp morning air and clouds making it an invigorating experience.
- As the trek progresses, participants pass by small ponds, rocky terrain, and open spaces with panoramic views of the Morni Hills and distant villages.

The midpoint of the trek is Thanda/Thatha Village, a small, traditional village that reflects the simple rural life of the Morni Hills. The village is known for its hospitality, and trekkers are welcomed by the locals, who share insights into their culture, lifestyle, and agricultural practices.

Cultural and Natural Significance of Thanda/Thatha Village

The visit to Thanda/Thatha Village is a highlight of the trek, as it offers participants a unique opportunity to experience the local way of life in Haryana's hilly terrain. The village, with its rustic charm, stands as a testament to traditional methods of farming and sustainable living. It is also an ideal spot for learning about local customs and traditions, as well as enjoying the tranquil atmosphere of village life.

In keeping with the World Tourism Day theme of "Tourism and Green Investment", the Haryana Tourism Department emphasized the importance of sustainable tourism during this trek and a guide explained the various flora along the ways. Participants were encouraged to respect the environment, minimize their impact on the surroundings, and engage with the local community in a meaningful and respectful manner.

Return Trek and Conclusion

The return trek from Thanda/Thatha Village back to Kanan Dhaman allows participants to explore more of the area's natural beauty, reflect on the experience and enjoy the peacefulness of the hills.

The Kanan Dhaman to Thanda/Thatha Village Trek, organized on World Tourism Day, underscores the Haryana Government's commitment to promoting eco-friendly travel and encouraging tourists to explore the lesser-known treasures of the state. By integrating local culture, nature, and adventure, this trek provides a wholesome experience, fostering a deeper connection between visitors and the region.

Conclusion

Trekking in Morni Hills offers a unique blend of natural beauty, cultural richness, and adventure. Whether you're a novice looking for an easy hike through serene landscapes or an experienced trekker seeking a challenging climb to a mountain peak, Morni Hills has something for everyone. The Haryana Tourism Department's efforts to promote trekking in this region have helped make it more accessible and enjoyable, ensuring that visitors can experience the best of Haryana's only hill station.

The Blue Sky Beckons

(Based on a true story)

A little blue baby pidgeon was abandoned.
I don't know why, but his Mother did not return.
So we rescued and took it under our human wings,
Nurtured and nursed it as best as you can imagine.

He grew and grew, and I taught him to jump and fly.
He learned real fast and soon began his trials.
At first, a little sortie from garden to verandah.
At night, he perched, comfy and cosy in our almirah.

However, it was only a matter of time we reckoned,
Before he would fly off into the blue sky that beckoned.
He grazed and roamed all day long with his flock of blue,
But to our joy to his childhood nurturers, he still is true.

At night, the homing pidgeon, home returns,
As for our love and home food, he yearns.
Time and again, he craves for his cuddles,
We have named him after the pilot Biggles.

Every evening eagerly we wait and by the window place,
A water bowl, rice, grain, and american corn in a plate.
Not knowing what awaits him or his worldly fate,
Someday, we hope he may bring home a mate.

So though the bright blue sky does beckon.
Baby Biggles also loves his home haven,
We feel blessed and delight in this lovable miracle.
That allowed us to be a part of Mother Nature's cycle.

Dr. Deviyani Singh
drdeviyanisingh@gmail.com

This poem by Dr. Deviyani Singh entitled 'The Canvas of Emotions' has been awarded the 1st prize for Poetry at the Chandigarh Literary Society's Annual Poetry Competition 2024

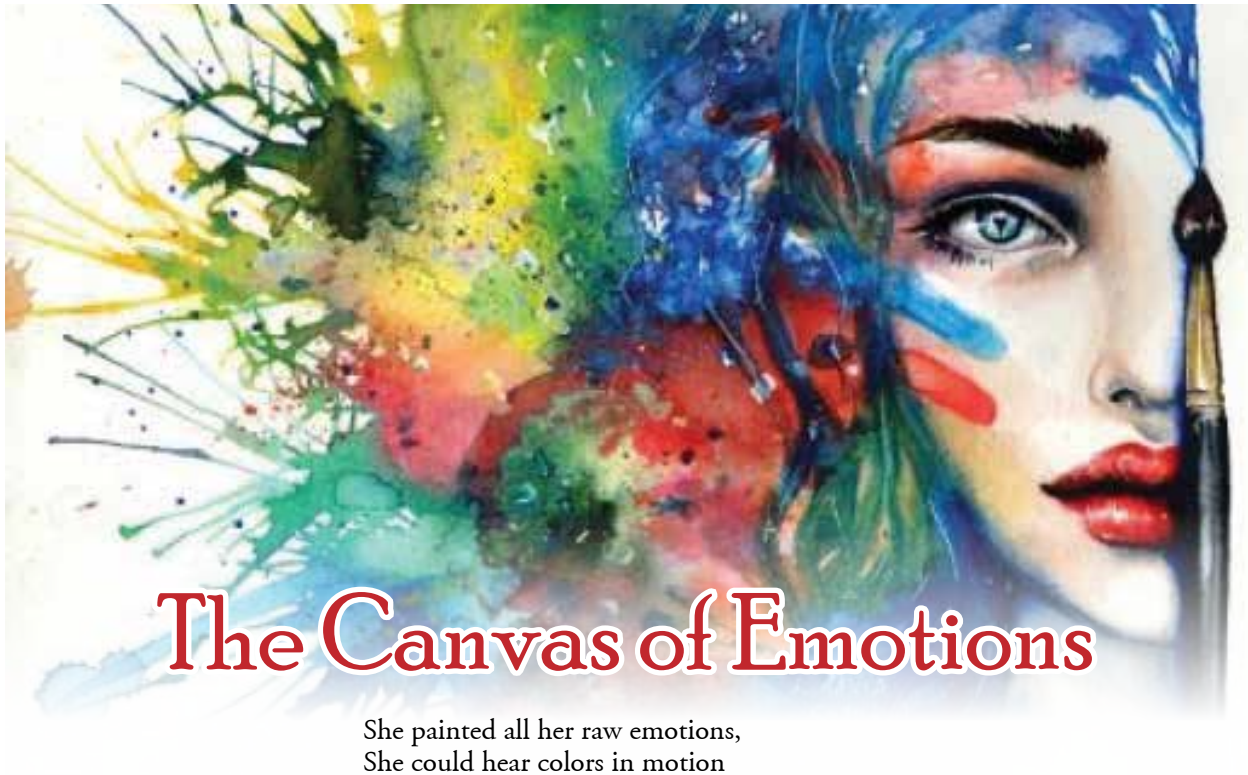

The Canvas of Emotions

She painted all her raw emotions,
She could hear colors in motion
Blue on a dreary day, red for anger.
Purple for her love, she lost to war.
White for the wedding gown, alas,
Still behind the showroom glass.

Strokes of slender fingers mirrored stories untold.
But in the night, dark dancing demons took hold.
Her brush unleashed hidden tormented ghouls,
The Canvas spoke, stretched like a lone wolf's howl.
Yet, amid the pain, there were moments of light,
When hope of new life filled her heart with delight.

She painted pink for the babies in prams in the park,
And lavender dreams even though her life was stark.
She painted her pain, and rainbow colored her joy,
The brush, in her taut veinous hand, held high.
Bled deep crimson strains straight from her heart,
Yes, but some might casually call it, just art.

Dr. Deviyani Singh
drdeviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

1. **An average city dog lives approximately three years longer than an average country dog**
2. NASCAR stands for National Association for Stock Car Auto Racing.
3. There are six million parts in the Boeing 747-400.
4. Each year there are approximately 20 billion coconuts produced worldwide.
5. There is a restaurant in Stockholm that only offers all-garlic products. They even have a garlic cheesecake.
6. The national anthem of Greece has 158 verses.
7. Pumpkins contain potassium and vitamin A.
8. The greatest mountain range is the Mid-Ocean Ridge, extending 64,374 km from the Arctic Ocean to the Atlantic Ocean.
9. Pepsi got its name from the ingredient pepsin, which is said to aid in digestion, however, it is not known.
10. The spray WD-40 got its name because there were forty attempts needed before the creation of the "water displacing" substance.
11. When the only queen ant dies, so does the entire colony, because no new workers are born.
12. The Dutch people are known to be the tallest people in Europe.
13. Goats do not have upper front teeth.
14. It has been suggested that shepherds are responsible for inventing the game golf. It is said that they used to use their staffs to hit the stones.
15. There are about 6,800 languages in the world.
16. The Hundred Years War lasted for 116 years.
17. Some dolphins can swim up to 40 kilometers an hour.
18. The longest U.S. highway is Route 20, which is over 3,365 miles.
19. The largest LEGO castle that was ever built was built with 400,000 LEGO bricks and was 4.45 m x 5.22 m.
20. One of the steepest main streets in Canada is located in Saint John, New Brunswick. Over a distance of two blocks the street rises about 80 feet.
21. Avery Laser Labels are named after company founder R. Stanton Avery.
22. Jupiter is the fastest rotating planet, which can complete one revolution in less than ten hours.
23. A chicken loses its feathers when it becomes stressed.
24. Nutmeg is extremely poisonous if injected intravenously.
25. The first Tupperware item marketed was the seven-ounce bathroom cup in 1945.

https://greatfacts.com/

1. The US company Shubb is famous for making small metal engineered gadgets for: Stringed instruments; Fishing; Cooking; or Cycling? **Stringed instruments**
2. What is the formal (systematic) chemical name for the alcohol in intoxicating drink: Methanol; Ethanol; Propan; or Methylbutan? **Ethanol**
3. What Italian word for 'it follows' refers to a smooth transition between two items, especially musical pieces? **Segue**
4. What informal rule, named after Intel Corp's co-founder, predicts the doubling of transistors on microchips every two years? **Moore's Law**
5. What cereal breakfast is a humorous metaphor for prison? **Porridge**
6. What logical common name is given to the cells which initiate cardiac contraction and so control heart rate? **Pacemaker**
7. Name the fictional suburb in Ira Levin's 1972 novel which became an expression for a wife who submissively obeys her husband? **Stepford**
8. What was the name given in Ancient Greek mythology to the time/situation before the creation of the universe: Chaos; Void; Neutron; or Galaxy? **Chaos**
9. Bakalva and börek (Turkey/central Asia), birnbrot (Switzerland), bear claw (USA), and briouat (Morocco) are types of what? **Pastry**
10. The nickname of 9th century Islamic mathematician Abu Ja'far Muhammad ibn Musa ('al-Kwarizmi' - the man of Kwarizm) is the etymological source of what computing term? **Algorithm**
11. Cape, Katanga, Masai, Barbary and Asiatic are generally considered sub-species of what 'apex' predator? **Lion**
12. London's Wembley Arena (next to Wembley Stadium) was built in 1934 as what sort of sporting facility, reflected in what original name (two answers required)? **Swimming Pool/Empire Pool**
13. From Greek words meaning 'flesh preserver' what coal-tar oil was widely used in wood treatment and medicine? **Creosote**
14. Charles Stent practised what surgery, for which he invented his eponymous technique: Dental; Heart; Orthopedic (bone/skeletal); or Tree? **Dental**
15. In ancient Greek mythology the godly personification of the sky, Uranus, had his what cut off: Ears; Arms; Testicles; or Bottom? **Testicles**
16. What famous maker of organs used in pop/rock music since the 1960s is an acronymic abbreviation of the Italian for "United Factory of Accordions'? **Farfisa**
17. A stilb is a measure of: Sound; Luminance; Velocity; or Equilibrium? **Luminance**
18. A metal ring or grommet in a sail or other nautical attachment, through which a rope passes is a: Tingle; Mingle; Cringle; or Pringle? **Cringle**
19. Milankovitch Cycles theory analyses changes in what, according to long-term movements of planet Earth: Climate; Population; Gravity; or Personality/mood? **Climate**
20. The centenary 2013 Chelsea Flower Show temporarily lifted a ban on what in its gardens? **Gnomes**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-142-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

विद्यालय प्रबंधन समितियों पर केंद्रित शिक्षासारथी का सितंबर अंक आकर्षक व सुहाने मुखपृष्ठ के साथ मिला। वैसे तो सभी विद्यालयों में ये समितियाँ गठित हैं, लेकिन इस अंक की सामग्री पढ़कर इन समितियों के गठन से लेकर कार्य-क्षेत्रों तक की विशद जानकारी प्राप्त हुई। हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के विकास में जन-समुदाय की भूमिका को विशेष तौर पर रेखांकित किया गया है। बीते दिनों विभाग द्वारा प्रदेश भर में 'विद्यालय प्रबंधन समिति प्रशिक्षण एवं सम्मेलन' नाम से जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किये गये, इस विषय पर सत्यवीर नाहड़िया का लेख काफी उपयोगी लगा। शेष स्थायी स्तंभ पूर्व की भांति पठनीय, मननीय व चिंतनीय थे। संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई।

पवन कुमार स्वामी
शिक्षक, राआसंप्रा विद्यालय
चुंगी- 7 लोहारू, भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का सौभाग्य मिला। आवरण पृष्ठ देखते ही मन बाग-बाग हो गया। प्रदेश के कुछ छात्र-छात्राएँ माननीय राष्ट्रपति जी को राखी बाँध रही हैं। कितना सही लिखा गया था- बच्चों के चेहरों पर फैली मनमोहक मुस्कान, राष्ट्रपति से मिल कर जागे नन्हे से अरमान। राष्ट्र की प्रथम नागरिक से विद्यार्थियों की भेंट सचमुच ऐसा अवसर है, जिसे वे आजीवन याद रखेंगे। पत्रिका में विद्यालय प्रबंधन समितियों के बारे में इतनी सारगर्भित जानकारी थी, जिसमें से अधिकांश के बारे में हम पहले अनभिज्ञ थे। संदीप कुमार ने अपने लेख में नलवा की की विद्यालय प्रबंधन समिति की जानकारी दी, जिसे अपने खर्च पर विद्यालय में बच्चों के लिए निःशुल्क सिलाई व कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र चला रखा है। ऐसी एसएमसी दूसरों के लिए प्रेरणा हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शिक्षक दुर्गेश, कलाकार छात्र प्रमोद पर लिखा लेख हर शिक्षक व विद्यार्थी को अवश्य पढ़ना चाहिए। इनका व्यक्तित्व भी अन्यों के लिए प्रेरक है। अंक की सर्वोपयोगी सामग्री के लिए संपादक मंडल को साधुवाद।

कविता सिंह
जेबीटी अध्यापिका, राआसंप्रा विद्यालय,
क्योड़क, कैथल, हरियाणा

पंछी

छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखलाते।
उड़ते ऊँचे आसमान में,
मंज़िल की ये राह दिखाते।।
ये छोटे-छोटे जीव मगर,
इनसे ये नभ भी हारा है।
आत्मबल से ओत-प्रोत ये,
मिल उड़ना इनको प्यारा है।
बड़े-बड़े जो न कर पाए,
पल भर में ये हैं कर जाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखलाते।
लड़ते हैं ये तूफानों से,
उड़ सूरज से भी बात करें।
पंख रुकते हैं कब इनके,
सागर, पर्वत भी पार करें।
कोमल काया के हैं लेकिन,
सदा हौसले ये आजमाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखलाते।।

तिनके-पत्ती जोड़-जोड़ सब,
रहे घरोंदे हैं सभी सजा।
इच्छा जो दाने-पानी की,
कमा श्रम से, ले हैं मज़ा।
प्यारी-सी एक सीख देकर,
अंतर्मन को हैं हर्षाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी-बड़ी सिखलाते।।
अपने घर, गली, नगर में,
यदि मधुर स्वर गुँजाना है।
मनुज सहेजे पंछी पंछी,
गीत यही अब गाना है।
ये नन्हे है मित्र हमारे,
हम से बस ये आस लगाते।
छोटे-छोटे पंछी लेकिन,
बातें बड़ी -बड़ी सिखलाते।।

- डॉ. सत्यवान सौरभ
333, परी वाटिका, कौशल्या भवन
बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ

मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

हैं फूल रोकते, काँटे मुझे चलाते
मरुस्थल, पहाड़ चलने की चाह बढ़ाते
सच कहता हूँ जब मुश्किलें नहीं होती हैं
मेरे पग तब चलने में भी शर्माते
मेरे संग चलने लगें हवाएँ जिससे
तुम पथ के कण-कण को तूफ़ान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

अंगार अधर पे धर मैं मुस्काया हूँ
मैं मरघट से ज़िंदगी बुला के लाया हूँ
हूँ आँख-मिचौनी खेल चला किस्मत से
सौ बार मृत्यु के गले चूम आया हूँ
है नहीं स्वीकार दया अपनी भी
तुम मत मुझ पर कोई एहसान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

श्रम के जल से राह सदा सिंचती है
गति की मशाल आँधी में ही हँसती है
शोलों से ही शृंगार पथिक का होता है
मंज़िल की माँग लहू से ही सजती है
पग में गति आती है, छाले छिलने से
तुम पग-पग पर जलती चट्टान धरो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

फूलों से जग आसान नहीं होता है
रुकने से पग गतिवान नहीं होता है
अवरोध नहीं तो संभव नहीं प्रगति भी
है नाश जहाँ निर्माण वहीं होता है
मैं बसा सकूँ नव-स्वर्ग धरा पर जिससे
तुम मेरी हर बस्ती वीरान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

मैं पंथी तूफ़ानों में राह बनाता
मेरा दुनिया से केवल इतना नाता
वह मुझे रोकती है अवरोध बिछाकर
मैं ठोकर उसे लगाकर बढ़ता जाता
मैं ठुकरा सकूँ तुम्हें भी हँसकर जिससे
तुम मेरा मन-मानस पाषाण करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

-गोपालदास नीरज

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114